धरती धन न अपना उपन्यास में दलित समस्या

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

नमीक्षा सतीश नाईक

अनुक्रमांक: 22P0140019

PR Number: 201910348

मार्गदर्शक

डॉ बिपिन तिवारी

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक: Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, "धरती धन न अपना उपन्यास में दलित समस्या" is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of "Dr. Bipin tiwari" and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

"Signature"

Namiksha naik

22P0140019

Date:

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "धरती धन न उपन्यास में दलित समस्या" is a bonafide work carried out by Ms Namiksha Satish Naik under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Dr Bipin Tiwari

Professor Anuradha Wagle

Dean ,SGSLL ,Goa University

GOA UNIVERSITY SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE TALEIGAON PLATEAU

School Stamp

Date:

Place: Goa University

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	II & III
	अनुक्रम	IV
	प्रस्तावना	V & VI

1	**लेखक परिचय** **1.1 व्यक्तित्व** **जगदीश चंद्र चंद्र** **1.1.1 जन्म** **1.1.2 बचपन** **1.1.3 शिक्षा** **1.1.4 नौकरी** **1.1.5 व्यक्तित्व की विशेषताएँ -** **1.1.6 मिलनसार व्यक्तित्व** **1.1.7 प्रभावित** **1.1.8 समाजवादी यथार्थ के पक्षधर** **1.1. 9 सम्मान** **1.1.10 मृत्यु** **1.2 कृतित्व** **1.2.1 कृतियाँ** **1.2.2 कहानी साहित्य** **1.2.3 नाटक साहित्य** **1.2.4 उपन्यास साहित्य**	Page No 3 to page No 04 Page No 05 to page No09

	लेखक जगदीशचंद्र जी द्वारा लिखित कुछ उपन्यास :- **1.2.5 यादों के पहाड़** **1.2.6 धरती धन न अपना** **1.2.7 आधा पुल** **1.2.8 कभी न छोडे खेत** **1.2.9 मुट्ठी भर काँकर**	
2	**2 अध्याय** **बीसवी सदी के साहित्य में दलित समस्या** **2.1 प्रस्तावना** **2.1.1बीसवी सदी में नवजागरण:-** **1 बीसवी सदी के साहिय में नारी समस्या :** **2.2 बीसवी सदी के महत्वपूर्ण चिंतक** **2.2.1 डॉ बाबा साहेब आम्बेडकर** **2.2.2 महात्मा फुले**	Page No-10 to page No- 14
3	**3.1 हिंदी उपन्यास में दलित जीवन - एक परिचय** **3.1.1 दलित जीवन की कठिनाइया** **3.1.2- खारे जल का गाँव** **3.1.3- 'एकलव्य'-**	Page No-15 to page No-23

	3.1.4-आग-पानी आकाश- **3.1.5-मोरी की ईट्ट** **3.1.6पठार पर कोहरा -** **3.1.7पिछले पन्ने की औरतें -** **3.1.8 मुक्तिपर्व उपन्यास -**	
4	**धरती धन न अपना उपन्यास में दलित समस्या** **4.1परिचय** **4.1.1उपन्यास में अभिव्यक्त समस्याएं :-** **4.1.2-भूत-प्रेत, चुडैल-डायन की समस्या** **4.1.3--तंत्र- मंत्र, झाड़-फूँक, जड़ी-बूटी, जादू-टोना सम्बन्धी अंधविश्वास की समस्या-** **4.1.4 (जमींदारों द्वारा शोषण समस्या)** **4.1.5-धार्मिक व्यक्ति द्वारा शोषण** **4.1.6-सरकारी अफसर और पुलिस द्वारा शोषण** **4.1.7-नारी शोषण** **4.1.8-जातीय भेद भाव** **4.1.9-भ्रष्टाचा** **4.1.10-अशिक्षा**	Page No -24 to page No 32

	4.1.11-धर्म परिवर्तन **5 अध्याय** **5.1उपन्यास की भाषा** **5.1.1शब्द-प्रयोग** **5.1.2 तत्सम शब्द-** **5.1.3 तद्भव शब्द** **5.1.4 विदेशी शब्द** **5.1.5 हिंदी भाषा के मुहावरें -** **5.1.6 कहवाते -** **उपसंहार**	Page No 33 to page No 70
	संदर्भ	Page No 70 to page No 78

प्रस्तावना

मेरे शोध का विषय हैं| धरती धन न अपना उपन्यास में दलित समस्या यह उपन्यास दलित जीवन पर आधारित उपन्यास हैं| इस उपन्यास में जो दलित की समस्याएं दिखाई हैं | उस मेंने मेरे अध्याय उसका उल्लेख किया हैं| यह उपन्यास वास्तविक जीवन पर आधारित उपन्यास हैं|

धरती धन न अपना" में पंजाब के दोआबा के ग्रामीण अंचल को चित्रमय रूप दिया गया है। होशियारपुर जिले के घोड़ेवाहा गाँव, जो काल्पनिक न होकर वास्तविक गाँव है, के पूरे सामाजिक- सांस्कृतिक परिदृश्य को लेखक ने उपन्यास में विस्तार से चित्रित किया है। इस चित्रण में वहाँ का रहन-सहन, रस्म-रिवाज़ व भाषागत चित्रण भी शामिल है। मै यहाँ जगदीशचन्द्र द्वारा लिखित उपन्यास ‘धरती धन न अपना उपन्यास का दलित समस्या के सदर्भ में अध्यन करूँगी। । मुख्य गाँव से बहिष्कृत बस्ती चमादड़ी में बसने वाली चमार जाति की पीड़ा व उत्पीड़न को जगदीशचन्द्र ने यथार्थ की भूमि पर उतारा है। छुआछूत के व्यवहार से उपजा यातना व संताप का मिलाजुला विद्रोही स्वर भी इस उपन्यास में अभिव्यक्त हुआ है। आजादी के बाद समाज में खास तौर से पंजाब में दलित समाज की स्थिति कैसी रही है, इसे मैं उपन्यास के माध्यम से समझने का प्रयास करूँगी |

यह उपन्यास मैने पहले कभी नही पढ़ा था | जब मैने यह पुस्तक पुस्तकालय में देखा तब मैंने यह उपन्यास पढ़ा तब मुझे लगा कि यह मेरा शोध विषय होगा एस उपन्यास को चुनने का कारण यह है कि इस उपन्यास में लेखक ने गहराई से दलित जीवन, और जाति व्यवस्था को दर्शाते हुए इस उपन्यास को लिखा है | इस उपन्यास में हमे कई प्रकार की दलित समस्याएं नज़र आती हैं जैसे की धर्म परिवर्तन , अछूत का वेवहर ,स्त्री शोषण, किसान समस्या और एक गरीब

की पिढा को धर्षाने की कौशिश इस उपन्यास के माध्यम से की गई हैं यह उपन्यास 1972 में प्रकाशित हुआ मुझे इस उपन्यास को पढ़ने के बाद मेरे सामने सचाई दिखाई दी | मुझे लगा कि इस उपन्यास में जिस दलित समस्या को दर्शाया गया है उसके बारे में मुझे और गहराई से जानना है | इसलिए मैने इस विषय को चुनकर दलित समस्या पर अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए शोध करना शुरू किया | मुझे दलित साहित्य को पढ़ना बहुत रोचक लगता है इसी कारण मैने शोध के लिए यह विषय चुना| जो दलितों की जो समस्याएं है वह मै इस शोध के माध्यम से लोगो तक विचार पहुँचा सकती हूँ |इसे लोगों तक लाना और उसपर विचार करने के लिए प्रेरित करना बहुत आवश्यक है | इसकी वजह से समाज में कुछ बदलाव हो सकता है | मुझे जो संदर्भ मिले हैं उसी आधार पर मैंने शोध को प्रारंभ किया है| सबसे पहले मेरे अध्याय हैं लेखक परिचय लेखक के बारे में मैंने अधिक जानकारी प्राप्त करने की कौशिश की है| मैंने उनके वक्तित्त्व और कृतित्व पर अधिक जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की हैं |जो मैंने मेरे प्रथम अध्याय में लिखा हैं| मुझे उनके व्यक्तित्व की

जानकारी (जगदीश चन्द्र दलित जीवन के उपन्यासकार) इस पुस्तक को पढ़ने के बाद प्राप्त हुई हैं जो (सं. चमन लाल) द्वारा लिखित पुस्तक हैं| मेरा शोध का अगला द्तिया अध्याय हैं 20 वी सदी के साहित्य में दलित समस्या इस पर मैंने पुराने दलित साहित्य में जो दलित समस्याएं हैं उसपर प्रकाश डाल हैं| दलित साहित्य को समझने से पहले 20 वी सदी के दलित साहित्य को जानना आवश्यक हैं | क्युकी मैंने जो शोध विषय चुना हैं वह दलित समस्या पार आधारित उपन्यास हैं इसी कारण पहले 20 वी सदी के दलित साहित्य को समझना महत्वपूर्ण हैं | मेरे तृतीय अध्याय है हिंदी उपन्यास में दलित जीवन |मैंने जो विषय चुना हैं वह

एक उपन्यास हैं जहाँ दलित की के जीवन की गाथा को दर्शाया गया हैं इसी कारण अन्य हिंदी दलित उपन्यास को जानना और समझना आवश्यक हैं अन्य हिंदी दलित उपन्यास के माध्यम से हमें अधिक जानकारी प्राप्त हुई हैं जो मैने मेरे तृतीय अध्याय में लिखा हैं | दलित उपन्यास को पूरी तरीके से जाने के लिए मैंने(हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन) यह पुस्तक की सहायता ली हैं यह पुस्तक डॉ शंभुनाथ द्विवेदी जी ने लिखी हैं| मेरा चौथा महत्वपूर्ण अध्याय हैं| मेरे शोध का मुख्य विषय धरती धन न अपना उपन्यास में दलित समस्या ईस अध्याय में मैंने जो दलित संस्याएँ मेरे चुने हूए उपन्यास में हैं उस समझाने की कौशिश की हैं जो दलित संस्याएँ इस उपन्यास में हैं उसके बारे में जानकारी इस अध्याय में नज़र अति हैं | इस अध्याय को पुरा करने के लिए मैंने मेरे आधार ग्रंथ की सहयता ली हैं | (धरती धन न अपना उपन्यास) जो जगदीश चद्र जी ने लिखा हैं| पाँचवा अध्याय उपन्यास की भाषा है जो धरती धन न अपना उपन्यास को पढ़ते समय समझ आता हैं इस उपन्यास को कई अन्य भाषाओं में इसका अनुवाद उर्दू व पंजाबी में भी किया गया हैं | विभिन्न शैलियाँ, कहावतें, मुहावरें, लोकक्तियाँ आदि का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता | मेरा छः वा अध्याय हैं दलित जीवन की कठिनाइया यह विषय अध्याय के लिए मैने चुना हैं क्युकी दलित साहित्य के साथ साथ हमें उनकी कठिनाइया भी जानना अनिवार्य हैं इससे उनके संगर्ष और कठिनाइयाँ के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त हो सकती हैं | सातवें अध्याय में उपसहर को सपष्ट करने की कौशिश मेंने की हैं | पूरे अध्याय की समशिपत् में जानकारी सातवे अध्याय में लिखित हैं | उपसहर के मध्यम से मेरे मुद्धो को मेंने समशिपत् में बताने की कौशिश की हैं| और अंत में आठवा अध्याय संदर्भ सूची में मेंने पूरे अध्याय के लिए जो भी सहायक और आधार ग्रंथ की सहायता ली हैं उसकी पुरी जानकारी हैं | और जो भी सहायक ग्रंथ लिए गए हैं उसका उल्लेख किया गया हैं | इस पूरे शोध के अध्याय में मैंने दलित जीवन को आधार रखकर दलित जीवन पर जादा प्रकाश डाला हैं। और उस गहरी से जानने की कौशिश की हैं| मेरे पूरे अध्याय दलित जीवन, दलित समस्या, दलित संघर्ष

दलित त्रासदी, हिंदी उपन्यास में दलित साहित्य, 20 वी सदी के हिंदी साहित्य में दलित जीवन के बारे में जानकारी और धन धरती न अपना उपन्यास में दलित समस्या को चित्रित किया हैं|

लेखक परिचय

1.1 व्यक्तित्व

जगदीश चंद्र चंद्र

1.1.1 जन्म

जगदीशचंद्र का जन्म बचपन पंजाब के होशियारपुर के घोड़ेवाहा नामक गाँव में हुआ। उनके पिता का नाम करमचंद वैद्य तथा माता का नाम त्रिकमदेवी था । उनके विश्वामित्र नाम के एक भाई थे । उनका बचपन दो गाँवों रलहन (ननिहाल) और घोड़ेवाहा में गुजरा। जगदीशचंद्र का परिवार उच्चवर्गीय था। घर का प्रमुख व्यवसाय खेती तथा पशुपालन था।

रलहन गाँव में अधिकांश कृषक परिवार थे। इस गाँव में जाति-भेद बहुत था। बचपन में लेखक के मन में दलित बस्ती के बारे में कौतुहल था। घर क माहौल उच्चवर्गीय होने से दलित बस्ती में जाने पर रोक लगाई थी । फिर भी जगदीशचंद्र चोरी-छुपे वहाँ पहुँच जाते थे और दलित लड़कों के साथ खेलना तथा उनके साथ कभी-कभी खाना भी खाते थे। उनका अमरचंद नाम का दलित मित्र था, जिसके घर जगदीशचंद्र चोरी-छुपे खाना खाते थे।

जगदीशचंद्र का विवाह क्षमा वैद्य के साथ हुआ । एक अर्धांगिनी के नाते श्रीमती क्षमा वैद्य ने जगदीशचंद्र का सफल साथ दिया। अपने पति के लेखन-कार्य के आगे उन्होंने अपनी आकांक्षाओं को सीमित रखा। किसी भी पारिवारिक कार्यक्रम में श्रीमती क्षमा वैद्य को अकेली जाना पड़ता था, परंतु उन्होने इसका कभी बुरा नहीं माना । अपने पति की सेवा के लिए सदैव रत रहने में ही श्रीमती क्षमा वैद्य ने अपने जीवन की सार्थकता मानी ।

1.1.2 बचपन

लेखक जगदीशचंद्र का बचपन और लड़कपन उनके ननिहाल रलहन नामक ग्राम में बीता। रलहून गाँव में अधिकांश कृषक परिवार थे। रलहन गाँव में जाति-भेद उच्चकोटि का था। बचपन में लेखक के मन में दलित बस्ती के बारे में कौतुहल था। घर का माहौल उच्चवर्गीय होने से दलित बस्ती में जाने पर लेखक जगदीशचंद्र को रोक लगाई थी।

फिर भी लेखक जगदीशचंद्र चोरी छुपे वहाँ पहुँच जाते थे और दलित लड़कों के साथ खेलना तथा उनके साथ कभी-कभी खाना भी खाते थे। अमरचंद नाम का दलित मित्र था, जिसके घर जगदीशचंद्र चोरी-छुपे खाना खाते थे।

नानी के द्वारा जातिविशेष की हिदायत देने पर जगदीशचंद्र के बालमन में प्रश्न उठता था कि "एक ही जमीन में कुओं से निकलनेवाला पानी, एक-से खेतों में उपजनेवाला अनाज और साग-सब्जी इस बस्ती में पहुँचने और पकने के बाद भिन्न और सवर्ण जातियों के खाने-पीने और स्पर्श के अयोग्य क्यों हो जाते हैं?"" इस प्रकार के प्रश्न लेखक जगदीशचंद्र के बालमन को व्यस्त करते थे। इस कट्टर जाति-भेद के परिवेश में लेखक जगदीशचंद्र का बचपन बीत गया।

1.1.3 शिक्षा

लेखक जगदीशचंद्र की प्रारंभिक शिक्षा ननिहाल रलहन गाँव में पूरी हुई। हाईस्कूल तक की पढ़ाई के लिए रलहन गाँव से पाँच कि. मी. दसूहा नामक गाँव में हररोज

पैदल जाना पड़ता था। स्नातक तक की शिक्षा होशियारपुर से पूरी की। डी. ए. वी. कॉलेज जालंधर से अर्थशास्त्र विषय में स्नातकोत्तर हुए। लेखक जगदीशचंद्र अर्थशास्त्र के छात्र रहे हैं |

1.1.4 नौकरी

पोस्ट ग्रॅज्युएशन के बाद आरंभ में प्रुफ रीडिंग जैसे कार्यों में लेखक जगदीशचंद्र संलग्न रहे। नौकरी की तलाश में दिल्ली आ गए। दिल्ली में पहली विधिवत नौकरी आकाशवाणी में सन् 1955 ई. में प्रेस इन्फर्मेशन ब्यूरो से सम्बद्ध रहे। सन् 1957 ई. में उनका तबादला श्रीनगर हो गया। छः साल वहाँ रहकर फिर 1962 में वे दिल्ली वापस आ गए।इन पाँच-छः वर्षों में जमाना बदल चुका था। लेखक का दफ्तर एक शीशमहल जैसे बाक्स-टाईप भवन में पहुँच गया था। उन दिनों लेखक राजौरी गार्डन, दिल्ली में रहते थे। सन् 1975 ई. के आपात्काल में लेखक जगदीशचंद्र सेंसर ऑफिसर के पद पर रहे। सन् 1978 ई. में दूरदर्शन के न्यूज विभाग में नौकरी की और वहीं से सेवानिवृत्त हो गए। नौकरी को उन्होने सिर्फ जीवन का महज साधन माना। नौकरी के अतिरिक्त वे लेखनकार्य में ज्यादातर व्यस्त रहते ।

1.1.5 व्यक्तित्व की विशेषताएँ -

लेखक जगदीशचंद्र का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उन्हें दलित जीवन के उपन्यास कर भी माने जाते हैं| उनके दिल में थोड़ी-सी भी अहं भावना नहीं थी। लेखनकार्य के अतिरिक्त गाना सुनना, फर्निचर बनाना जैसे कामों में विशेष रुचि रखते थे। उनका व्यक्तित्व खुला दस्तावेज था। अपनी नौकरी की व्यस्तता के दौरान भी साक्षात्कार देने के लिए समय निकालते थे। संवेदशीलता एवं भावुकता की झलक

लेखक जगदीशचंद्र के समग्र साहित्य में प्रतिबिंबित होती है। उनके साहित्य में जादा तर दलित जीवन को उन्होंने दर्शन की कौशिश की हैं उन्होंने उनके बाल आयु में किशोर अवस्था में जो कुछ अपनी आखों के सामने देखा उस जगदीशचंद्र जी ने अपने साहित्य के माध्यम से उनके विद्रोही भाव को व्यक्त किया हैं|

रचनाकार समाज का एक अंग होता है। समाज के प्रति हर एक रचनाकार संवेदनशील होता है। संवेदनशील रचनाकार ही समाज के यथार्थ को यथातथ्य चित्रित करता है। लेखक जगदीशचंद्र अपने परिवेश एवं समाज के प्रति संवेदनशील थे।

पंजाब प्रांत में दलितों पर हो रहे अन्याय-अत्याचार एवं शोषण को लेखक जगदीशचंद्र ने अपनी आँखों से देखा था। स्वयं उच्चवर्गीय होने के बावजूद दलित समाज के प्रति उनमें करुणा थी। दलितों की यथार्थ स्थिति का चित्रण लेखक जगदीशचंद्र ने अपने साहित्य में किया है। उनके साहित्य यथार्थवादी साहित्य माने जाते हैं |

<u>1.1.6 मिलनसार व्यक्तित्व</u>

लेखक जगदीशचंद्र का व्यक्तित्व मिलनसार रहा है। उनका मित्र-परिवार काफी बड़ा है। पत्रकार तथा साक्षात्कारवालों से वे खुलकर मिलते थे। घर में बेटे के प्रति उनके मन में मित्रता के भाव थे। दोनों बाप-बेटे किसी भी विषय पर घुल-मिलकर बात करते थे। मुहल्ले तथा मैदान में खेल रहे छोट-छोटे बच्चे देखना उन्हें बहुत पसंद था। मिलनसार व्यक्तित्व के कारण ही लेखक जगदीशचंद्र का मित्र-परिवार बड़ा था। वह एक सीधे साधे मिलनसार व्यक्ति रहे साहसी एवं जोखिम भरे कामों

मे लेखक जगदीशचंद्र स्वारस्य रखते थे । साहसी प्रवृत्ति के कारण बी. बी. सी. और ए. बी. सी. की न्यूज टीमों के साथ स्वयं लेखक सरहद पर जाते थे।

1.1.7 प्रभावित

लेखक जगदीशचंद्र अर्नेस्ट हेमिंग्वे को पसंद करते थे। हेमिंग्वे का उपन्यास 'फॉर हूम द बेल टॉल्स' और शेलाखोव के उपन्यास 'धीरे बहो दोन रे' से लेखक जगदीशचंद्र विशेष प्रभावित हुए। इसके साथ-साथ हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचंद के 'निर्मला' और 'गोदान' उपन्यास से भी वे प्रभावित रहे।

1.1.8 समाजवादी यथार्थ के पक्षधर

लेखक जगदीशचंद्र बचपन से उच्चवर्गियों द्वारा निम्नवर्गियों का हो रहा शोषण देखते आए थे। इसीलिए उन्होने अपने उपन्यासों में समाज के सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है। लेखक जगदीशचंद्र सांप्रदायिकता का विरोध करते हैं। वे समाजवादी यथार्थवादी में विश्वास रखते थे उसके पक्षधर भी रहे हैं|

1.1. 9 सम्मान

पंजाब सरकार का 'शिरोमणि साहित्यकार' (हिन्दी) 1981 सम्मान के अलावा कुछ और सरकारी व गैर-सरकारी पुरस्कार जगदीश चंद्र जी को प्राप्त हुए|

1.1.10 मृत्यु

सेवानिवृत्ती के पश्चात् लेखक जगदीशचंद्र पंजाब प्रांत के जालंधर शहर में परिवार के साथ रहने लगे थे। एक प्रगतिशील रचनाकार, गैर-दलित होकर भी दलित समाज की समस्याओं को उठानेवाले ऐसे महान कलाकार की मृत्यु सन् 10 अप्रैल 1996 ई. को जालंधर में हुई।

1.2 कृतित्व

1.2.1 कृतियाँ

उपन्यास

संपादित करें

यादों का पहाड़ (1966)

धरती धन न अपना (1972)

आधा पुल (1973)

कभी न छोड़े खेत (1976)

मुठ्ठी भर कांकर (1976)

टुंडा लाट (1978)

घास गोदाम (1985)

नरक कुंड में वास (1994)

लाट की वापसी (2000)

जमीन अपनी तो थी (2001)

1.2.2 कहानी साहित्य

जगदीशचंद्र की पहली कहानी 'अपना घर' उर्दू भाषा में लिखी जो सन् 1950 में प्रकाशित हुई। इसके साथ-साथ एक कहानी संग्रह 'पहली रपट' नामक सन् 1981 में प्रकाशित हुआ। कहानी लेखन के बारे में जगदीशचंद्र लिखते हैं- "कॉलेज के दिनों में मैने उर्दू में कुछ कहानियाँ लिखी थी जो 'अदबे लतीफ' और 'शाहराह' जैसे प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी थी। आत्म-अभिव्यक्ति के लिए मैने एक विधा चुन ली थी।"" उक्त कथन से लेखक की कहानी लेखन की दृष्टि स्पष्ट हो जाती है। लेखक जगदीशचंद्र जी ने ज्यादातर कहानियाँ देश-विभाजन पर लिखी हैं।

1.2.3 नाटक साहित्य

उपन्यास विधा की तरह लेखक जगदीशचंद्र जी ने नाटक विधा में ज्यादह लेखन-कार्य नहीं किया। उन्होने 'नेता का जन्म' नामक एक ही नाटक लिखा। इसके बाद

उन्होंने भगतसिंग पर नाटक लिखना चाहा, परंतु वह अधूरा ही रहा। इस नाटक के बारे में तरसेम गुजराल द्वारा पूछे जाने पर जगदीशचंद्र जी ने कहा "शहीद भगतसिंग पर एक नाटक। इसमें भगतसिंह के मानवतावाद को अधिक उभारना चाहता हूँ। हमने भगतसिंग को शहीद बनाकर टाँग दिया है। जनता के प्रति बेपनाह दर्द को समझने की चेष्टा नहीं की।

1.2.4 उपन्यास साहित्य

लेखक जगदीशचंद्र जी ने अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा में सबसे अधिक लेखनकार्य किया। अब तक उनके दस उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। उपन्यास विधा की ओर आकृष्ठ होने का कारण वे स्वयं बताते हैं- "कहानी से उपन्यास की ओर इसीलिए आया कि कहानी में अपने चरित्रों का विकास नहीं पा रहा था।" यह सही है कि कहानी की अपेक्षा उपन्यास विधा में पात्रों का विस्तार से गठन किया जाता है।लेखक जगदीशचंद्र के उपन्यासों में 'यादों के पहाड़', 'धरती धन न अपना', 'आधा पुल', 'कभी न छोड़े खेत', 'मुट्ठी भर काँकर', 'टुण्डा लाट', 'घास गोदाम', 'लाट की वापसी' और 'जमीन अपनी तो थी' आदि आते हैं। लेखक जगदीशचंद्र जी ने निम्नवर्ग के यथार्थ को अपनी कृतियों में प्रमुखता से स्थान दिया है। लेखक जगदीशचंद्र के लेखन के संदर्भ में शिवकुमार मिश्र का विचार दृष्टव्य है- "जगदशीचंद्र उन रचनाकारों में हैं जिन्होंने अपने मानवीय रचनात्मक सरोकारों के बरक्स न केवल परंपरा की चुनौती स्वीकार की, उसे अपनी रचनाशीलता में पुनर्जीवित भी किया, उसमें अपने समय की चिंताओं को नक्श करते हुए अपने समय के लिए तो सार्थक बनाया ही, उसे आगे की रचनाकार पीढ़ियों के लिए सुलभ किया है।" यह सही है कि लेखक जगदीशचंद्र जी का साहित्य तत्कालिन परिस्थितियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है।

लेखक जगदीशचंद्र जी द्वारा लिखित कुछ उपन्यास :-

1.2.5 यादों के पहाड़

सर्व प्रथम 'पूरा आदमी' इस शीर्षक से लिखा गया यह उपन्यास था, परंतु बाद में सन् 1966 में 'नेशनल पब्लिशिंग हाऊस' से 'यादों के पहाड़' इस नाम से प्रकाशित हुआ। प्रकृति का यथावत चित्रण इसमें हुआ है। यह उपन्यास सफल सिद्ध नहीं हुआ।

1.2.6 धरती धन न अपना

लेखक जगदीशचंद्र का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास के रूप में 'धरती धन न अपना' का नाम लिया जाता है। जिसका प्रकाशन 'राजकमल प्रकाशन' नई दिल्ली से सन् 1972 में हुआ। रूसी, उर्दू, पंजाबी, जर्मन और अंग्रेजी भाषा में भी अनुदित हुआ है।

प्रस्तुत उपन्यास का आरंभ नायक काली के शहर से गाँव लौटने से होता है। काली दलित युवक है। अपने पिता का पक्के मकान का सपना पूरा करते समय उसे अपने बिरादरी तथा उच्चवर्गियों के क्रोध का सामना करना पड़ता है। पूँजीपति तथा जमींदारों दूवारा हो रहे अन्याय-अत्याचार एवं शोषण से घोड़ेवाहा गाँव की जनता पीड़ित है। उनमें चेतना लाने का असफल प्रयास काली के द्वारा होता है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास के संदर्भ में रमेश कुंतल मेघ कहते हैं- "यह कृति धरती के दुखियारों का एक समाजार्थिक दस्तावेज बन गई है।" यह सही है कि लेखक जगदीशचंद्र ने दलितों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। अतः 'धरती धन न अपना' उपन्यास द्वारा दलित चेतना को जगाने का प्रयास लेखक ने किया है।

1.2.7 आधा पुल

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन से सन् 1973 में प्रस्तुत उपन्यास प्रकाशित हुआ । 'आधा पुल' उपन्यास भारत-पाकिस्तान युद्ध को लेकर रचा गया है।'आधा पुल' उपन्यास में युद्ध के दरम्यान कैप्टन इलावत के साथी पाँच जवान और एक जे. सी. ओ. शहीद हो जाते हैं। अपने साथियों की मृत्यु के पश्चात् कैप्टन इलावत पुल को उड़ा देता है, जिस पर पाकिस्तानी सैनिकों ने कब्जा किया था। इस युद्ध में कैप्टन इलावत की मौत हो जाती है। दूसरी ओर कैप्टन इलावत सेमी से मुहब्बत करता था, परंतु इलावत की मौत से दोनों की प्रेम कहानी अधूरी रह जाती है। यह उपन्यास भारतीय सैनिक एवं अफसरों की वास्तविक जिंदगी पर प्रकाश डालता है।

1.2.8 कभी न छोडे खेत

'कभी न छोड़े खेत' उपन्यास सन् 1976 ई. में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास में संपन्न जाट किसानों के आपसी टकराव और ऋणशोध की कहानी है जिसमें पुलिस और अदालत की यातनाओं का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया गया है।

1.2.9 मुट्ठी भर काँकर

प्रस्तुत उपन्यास का प्रकाशन सन् 1976 में हुआ। देश विभाजन के बाद दिल्ली में आनेवाले शरणार्थियों की भीड़ को बसाने के सिलसिले में खेती की भूमि के अधिग्रहण, किसानों की बेदखली और शहरीकरण की प्रक्रिया में आनेवाली तेजी की कहानी है।

१-जगदीश चंद्र दलित जीवन के उपन्यासकर - सं. चमन लाल (प्रधाम संस्करण, 2010) प्रकाशन आधार प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड पृष्ठ 26,27

२- लाट की वापसी (जगदीश चद्र) पहला संस्करण 2000 प्रकाशन - राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली -110002

३- धरती धन न अपना उपन्यास (जगदीश चंद्र)

४-जगदीश चद्र रचनावली (संपादक विनोद शाही) प्रकाशन वर्ष 2011

2 अध्याय

बीसवी सदी के साहित्य में दलित समस्या

2.1 प्रस्तावना

दलित समाज एक घटक होने के साथ-साथ मानवीय जीवन का एक आयाम भी रहा है। फुले, शाहू, अम्बेडकर जैसे लोगों के कार्य के परिणाम स्वरूप दलितों के जीवन में परिवर्तन हुआ। दलित समाज संगठित होकर अपने अधिकारों की मांग करने लगा। पूँजीवादी, सामंतवादी व्यवस्था के खिलाफ दलित संघर्ष करने लगा। साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में उन्हें वाणी देने का प्रयास किया। दलितों का विद्रोही स्वर रचना के रूप में साहित्य क्षेत्र में दिखाई देने लगा। आलोच्य उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं में यही विद्रोही स्वर चित्रित किया है। वही विद्रोही स्वर दलितों की चेतना को दर्शाता है। दलित साहित्य में दलित जीवन, उनकी चेतना, उनकी प्रेरणा और उनकी समस्याएँ आदि मिलती हैं। प्राचीन कालीन समाज व्यवस्था में सत्ता, सम्पत्ति, अधिकार, कुल श्रेष्ठता, वंश श्रेष्ठता के आधार पर दलित, निर्धन, पीड़ित लोगों का शोषण हो रहा था । यह शोषण दमन, अन्याय, अत्याचार, घृणास्पद व्यवहार रहा है। 'दलित', दास, अधिकार हीन व्यक्ति का बोध कराने वाली संज्ञा रही हैं |

2.1.1बीसवी   सदी में नवजागरण:-

नवजागरण काल में समाज सुधार रूढ़ियों का विरोध, नारी की प्रगति का समर्थन, देशवासियों पर होने वाले अत्याचारों के प्रति विद्रोह, शोषित-पीड़ित, दीन-हीन दलित वर्ग के लिए अधिकारों की मांग, उस वर्ग के प्रति गहरी सहानुभूति आदि भाव दिखाई देते हैं। सामाजिक दृष्टि से जनता अन्याय, शोषण, दरिद्रता से पीड़ित थी। दलित जातियाँ उच्च वर्णों के प्रभाव से दबी हुई थी। उनका जीवन उपेक्षित और बहिस्कृत था।स्वातंत्र्यपूर्व काल में अज्ञान, अंधविश्वास के कारण छुआछूत की भावना अधिक प्रभावी थी। दलितों को मंदिर, पाठशाला, सार्वजनिक स्थल एवं

समारोह पर प्रवेश निषिद्ध था। यहाँ तक रास्ते पर चलना भी मना था। पशु के समान जीवन जीने वाला दलित मुक्ति के लिए तड़प रहा था। आम्बेडकर, फुले, शाहू आदि जैसे लोगों के रूप में उन्हें मसीहा मिला। परिणामतः दलितों में चेतना जागृति हुयी। जातीयता, उच्च-नीचता का विरोध करके सामाजिक एकता कानारा बुलन्द करने की कोशिश की गई। आम्बेडकर का धर्म परिवर्तन, कर्मवीर भाऊराव का शिक्षा प्रसार, शाहू और फुले का समता का विचार दलितों में चेतना का कारण बना। आजादी के बाद भारतीय संविधान में आरक्षण के नाम पर दलितों को सुविधाएँ उपलब्ध कराई। संसद, नौकरी आदि में आरक्षित जगह रखकर दलितों का विकास करने की कोशिश की। कानून के आगे सभी समान हैं तथा कमजोर वर्गों के लिए विशेष छूट देने की बात कही गई। केंद्र सरकार और राज्य सरकारों ने

दलितोद्धार को प्रोत्साहन देने के लिए समय-समय पर अनेक कानून पारित किये। पिछड़ी हुई जातियों की आर्थिक कमजोरी देखकर बच्चों के लिए मुक्त शिक्षा व्यवस्था के साथ-साथ छात्रवृत्तियाँ देने का और छात्रावास खोलने का प्रबंध किया।

बीसवीं शदी के विकास का प्रधान अंग सरकारी अफसर और पुलिस व्यवस्था रही है। परन्तु विकास के साथ-ही-साथ दलित, किसान, गरीब के शोषण का आयाम भी बनी है। पुलिस का जमींदारों से दोस्ती होना, रिश्वत लेना, बेकसूर लोगों की पिटाई करना, उन्हें जेल भेजना, नारी की छेड़-छाड़ करना, पूछताछ का बहाना बनाकर दलितों को धोखा देना आदि रूप में पुलिस जनता का शोषण कर रही थे। उनका साथ सरकारी अफसर भी दे रहे थे।

आजादी के पश्चात मराठी साहित्य में नई संवेदनशीलता पाई जाती है। हर काल की एक विशेष संवेदनशीलता होती है। हर काल की संवेदना को उस काल का साहित्य प्रकट करता है। आजादी मिली लेकिन इस देश का आम आदमी आज भी अतृप्त है, भूखा है। आजादी के पहले जो सपने संजोये थे वे तहस-नहस हो गए

है। गरीब और भी गरीब बनता जा रहा है और सत्ता के आश्रय से अमीर बना, अवैध राह से संपत्ति लूटने वाला वर्ग संख्या की दृष्टि से अल्प है लेकिन वह ऐशोराम में जी रहा है। हम अधिक असुरक्षित हो रहे है। जीवन अतिशूद्र और क्षणभंगुर होने का एहसास दृढ़ होता जा रहा है। सभी स्तर के मनुष्य क्यों अतृप्त हैं? सत्ता, संपत्ति और प्रतिष्ठा से वंचित सफेदपोश मध्यवर्गीय मनुष्य हो या हाल ही में सत्ता पर आसीन होने से संपत्ति में चूर नया अमीर वर्ग हो या बड़े उद्योगों को निर्माण कर भोग में लीन धनिक वर्ग हो या मंत्री पद निभाने वाले और मंत्री पद के लालची नेता हो या खिलने वाली युवा पीढ़ी हो, सभी क्षेत्रों में पुरुष की बराबरी करने वाली स्त्री हो, सभी मनुष्य अतृप्त है, बेचैन हैं। ऐसा क्यों? इस प्रश्न का उत्तर खोजना बड़ी चुनौती है। स्वातंत्र्योत्तर काल में ज्ञान की परिधि का विस्तार हुआ। उसी प्रकार सामाजिक समस्याएँ बढ़ गई। अब जीवन सीधा सरल नहीं तो जटिल एवं चुनौतियों से लबालब भरा हैं। मानवी प्रयास समृद्धि की दिशा में, गति की ओर, निरंतर परिवर्तन के पीछे दौड़ रहे हैं और विश्व रचना से मनुष्य अलग होता जा रहा है। लेखन में एक और विफलता और निरर्थकता का एहसास है, तो दूसरी ओर आशा का स्वर और प्रकाश को अपनाने वाला एहसास है।

स्वतंत्रता के बाद संवेदना का केंद्र ही बदल गया है। संवेदन केंद्र बदलने पर अर्थात भावनाओं का अधिष्ठान व्यक्त करने वाला साहित्य का नया रूप अस्तित्व में आता है। अर्थात यह संख्या में बहुत कम होता है। साहित्य के क्षेत्र में गोहार कम और गूँज ज्यादा होती है। दलित साहित्य के संदर्भ में भी यही कह सकते हैं। दलित साहित्य का अलग सूभा क्यों ? साहित्य की 'दलित' लेबल लगाकर उसका विचार करना उचित है? 'दलित' यह जातिवाचक शब्द 'शोषित' अर्थ में प्रयुक्त किया है? ऐसे कई प्रश्न उठाये जाते है। इन प्रश्नों के उत्तर खोजने होंगे। यह केवल उपेक्षित जनजाति का प्रक्षोभ नहीं है

1 बीसवी सदी के साहिय में नारी समस्या :-

नारी शोषण के अंतर्गत नारी का अधिकार से वंचित होना, उसकी अस्मत लूटना, विवाह को अधिकार न होना, धार्मिक व्यक्ति, जमींदार, अफसर द्वारा शोषण होना, बेगार लेना, पिटाई होना, परिवार में अपमानित रहना, शिक्षा से वंचित रखना, रखैल बनाना, विधवा होना, आदि कई नारी विषयक समस्याओं को स्पष्ट किया है। नारी का जीवन, असुरक्षित रहना, पुनर्विवाह का अधिकार न होना,वैधव्य में जीवन बिताना, अवैध संबंध के लिए मजबूर करना, अवैध मातृत्व का बोझ ढोना, अंत में आत्महत्या करने पर मजबूर होना, आदि घटनाओं से नारी जीवन की समस्याएँ चित्रित की है|

2 जाती भेद भाव समस्या :-

जातीय भेदाभेद की समस्या के अंतर्गत जातिबाह्य विचार का निर्णय, जातिबाह्य कर्म का विरोध, पाठशाला और मंदिर में प्रवेश निषेध, पनघट अलग होना, उन पर झूठे आरोप थोपना, अपनी जाति को श्रेष्ठ मानकर दूसरों को हीन बताना, जातिपंचायत का आधार लेकर जाति-जाति में संघर्ष बनाये रखना आदि आयामों में आलोच्य बीसवीं सदी में जातीय भेदाभेद की समस्या दिखाई देती है।

3 भ्रष्टाचार की समस्या :-

भ्रष्टाचार की समस्या के अंतर्गत जमींदारों, महाजनों के साथ दांत-काटी-रोटी का संबंध प्रस्थापित करके पुलिस द्वारा भ्रष्टाचार करना, अवैध धंधों को बढ़ावा देने के लिए रिश्वत लेना, राजनीतिक दल-बदल के लिए भ्रष्ट नीति को अपनाना, लालच दिखाना, बेकसूर किसानों पर झूठे जुल्म थोपकर फायदे के लिए रिश्वत देना, आदि कई भ्रष्टाचार के प्रकार उपन्यासों में लक्षित हुए हैं |

4 राजनीतिक समस्या :-

राजनीतिक नेता सेवा के नाम पर सत्ता प्राप्त करके जनता का शोषण कर रहे हैं। भारतीय राजनीति का, प्रजातंत्र का एक घिनौना रूप इसमें दिखाई दे रहा है। वोट खरीदना, जाति के आधार पर चुनाव लड़ना, पद-सत्ता का दुरूपयोग करना, विपक्षी नेता की पिटाई करना, चुनावी टिकट का लालच दिखाना, कत्ल करना, ठेका लेना, भाई-भतीजा वाद को बढ़ावा देना, पुलिस से दोस्ती करके अवैध धंधे करना आदि रूप में यह राजनीतिक शोषण दिखाई दे रहा है।

2.2 बीसवी सदी के महत्वपूर्ण चिंतक

2.2.1 डॉ बाबा साहेब आम्बेडकर

भारत में दलितों की हीन अवस्था और उनके उद्धार का कार्य युग प्रवाह के साथ हुआ और आज भी हो रहा है। उसमें डॉ. अम्बेडकर, महात्मा गाँधी, महात्मा फुले और कर्वे शामिल थे। उनका जीवन कार्य दलितों की खातिर समर्पणशील और त्यागी व्यविकतच का प्रतिबिंब है जिसमें अनावश्यक, अन्यायी, झूठी प्राचीन व्यवस्था के प्रति विद्रोह का स्वर उभरा हुआ है। इस महान विभूति के जन्म से न केवल दलितों को बल्कि मानवता को मान, प्रतिष्ठा और चेतना का स्वरूप प्राप्त हुआ। समता और स्वातंत्र्य के प्रतिपादक तथा दलितों के भाग्यविधाता के रूप में आम्बेडकर का व्यक्तित्व रहा है।

डॉ. अम्बेडकर ने प्रथम गोलमेज परिषद में भारतीय दलितों का प्रतिनिधित्व किया और दलितों की मांगे भी पेश की। द्वितीय गोलमेज परिषद में भी उन्होंने अपनी कुछ शेष मांगे भी पेश की। कालाराम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह, महाड सत्याग्रह, मुखेड़ ग्राम का सत्याग्रह, रामकुंड प्रवेश सत्याग्रह, रामरथ उत्सव विषयक सत्याग्रह आदि ने रूढ़िप्रिय हिन्दू समाज की नींव हिला दी। दलितों की उपेक्षित, बहिस्कृत जिन्दगी का नग्न यथार्थ रूप दिखाकर उनके लिए समान हकों की मांग की। उच्च वर्षीय सनातनी हिन्दू मन को दलितों की पीड़ा, दर्दभरी पशुवत हालत पर विचार

करके ऊँच नीच भेदभाव, जाति-पांति की भेदनीति का त्याग करने के लिए उत्तेजित किया। जो धर्म न्याय नहीं देता उसे त्याग देने का विचार शुरु हुआ। हिन्दू धर्म के खिलाफ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए डॉ.अम्बेडकरजी की यह स्पष्ट मान्यता थी कि, धर्म का कार्य समाज को चलाने का है एवं उसे सम्यक दृष्टि से देखने का है। बचपन से लेकर मृत्यु तक समाज के भेदभाव को झेलने वाले इस महान विचारक के दिमाग में हिन्दू धर्म के प्रति घृणा समय के साथ बढ़ती ही गई। धर्म परिवर्तन के दूसरे ही दिन यानी १५ अक्टूबर को नागपुर में 'नागपुर नगरपरिषद' द्वारा बाबासाहब का 'नागरिक अभिनंदन' किया गया। अभिनंदन पत्र में उनको एक महान सामाजिक कार्यकर्ता, उद्धारक, दार्शनिक एवं संविधान विज्ञ की उपाधि प्रदान की गई।

2.2.2 महात्मा फुले

महात्मा फुले का जीवन कार्य दलितोद्धार और दलित परिवर्तन की दिशा में उठाया गया एक ठोस कदम था। प्राचीन भारतीय समाज के गठन में शूद्र तो परावलंबी, पराधीन सेवक थे। प्राचीन काल में सामाजिक जीवन से बहिस्कृत निर्दलित जो लोग थे वे तो शूद्र-अतिशूद्र ही थे। उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाने का मौका नहीं दिया जाता था। कुछ अपने उद्धार का मार्ग ढूँढते थे। अनिर्वासित शूद्र मंदिर प्रवेश या रामायण, महाभारत, पुराण आदि के श्रवण से भक्ति-मार्ग द्वारा आत्मोन्नति कर रहे थे। परन्तु निर्वासित शूद्रों को बहिस्कृत किया जाता था। दलितों में अधिकांश जंगली टोलियों का समावेश होता था। इन्हें ही बाद में 'दलित' नाम प्राप्त हुआ। निषाद और चांडाल इनके उदाहरण हैं। इन्हें पंचम वर्ण की संज्ञा से अभिहित किया गया है। ग्रीक, शक, कुशाण,हूण आदि परकीय लोगों को अस्पृश्य माना जाता था। आर्थिकता की दृष्टि से दलित शोषित ही था। द लित सवर्णों, जमींदारों, ठाकुरों के यहाँ काम करते थे। खेती में मजदूरी करते थे।

वे दास, गुलाम जैसी जिन्दगी जीते थे। बिना मेहनताना काम करते थे। राजनीति में चुनाव लड़ना तथा वोट देने का भी अधिकार नहीं था। यदि हो तो जमींदार, ठाकुरों के इशारों पर वे चलते थे। राजनीतिक अधिकार नहीं था। सामाजिकता की दशा दयनीय थी। मंदिर, पनघट, पाठशाला में प्रवेश करना मना था। उनके पनघट, पाठशाला अलग थे। सार्वजनिक, सामाजिक समारोह में उन्हें शामिल नहीं किया जाता था। समाज से बहिष्कृत, शापित उनका जीवन था। धार्मिकता की दृष्टि से धर्म ग्रंथ पठन, मनन करना मना था। भगवान का नाम लेना, बच्चों को वही नाम देना पाप था। यहाँ स्पष्ट है कि दलित सभी स्तर पर शोषित था। मानव होकर भी मानव से दूर था। इसी कारण दलित में चेतना का निर्माण होना आवश्यक था। शोषित, शापित दलित चेतित बनकर स्वत्व की रक्षा का प्रयास महात्मा फुले कर रहा थे |

1-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ , २२६

2-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २२८

3- हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २३७

4-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २३५

5-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २३९

3 अध्याय

3.1 हिंदी उपन्यास में दलित जीवन - एक परिचय

यह पर मेंने कुछ दलित उपन्यास लिए है जैसे की खारे जल का गाँव, मोरी की ईट, एकलव्य , आग आकाश

3.1.1 दलित जीवन की कठिनाइया

समकालीन साहित्य के रचनाकार एवं समीक्षकों की दृष्टि में ही नहीं अपितु भारतीय संदर्भ में 'दलित' शब्द एक जातिबोधात्मक शब्द के रूप में व्यवहृत हो रहा है। यथा आदिवासियों, जन जातियों तथा आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़ी जन जातियों के रूप में है। हम अपने वर्ण, श्रमिक, मजदूर, किसान, हलवाहा आदिवासियों के नाम पर न बनाकर ऐसी जतियों के आधार पर मानते आए हैं, जो वर्ण-व्यवस्था की कोख से पैदा हुए। फिर भी हमारे यहाँ दलित एक जन्म जात जाति बोधक संज्ञा बना हुआ है।दलित जीवन की महत्वपूर्ण समस्या शोषण रही है। अर्थाभाव, अज्ञान, कमजोर मनोवृत्ति, एकता का अभाव आदि के कारण शोषण हो रहा है। दलित समाज में यह सभी प्रवृत्तियाँ रही है। अतः उनका जमींदार, पुलिस अफसर, धार्मिक व्यक्ति, राजनीतिक व्यक्ति द्वारा शोषण हो रहा है। जमींदारों की प्रवृत्ति आज भी दिखाई देती है। किसान, दलित, अछूत की जमीने हड़पना, उनसे बेगार लेना, मजदूरी नहीं देना, औरतों की अस्मत लूटना, नारियों की पिटायी करना, झूठे आरोप लगाकर जेल भेजना, सरकारी अफसरों के साथ संबंध रखकर गरीबों पर आतंक जमाना, हमेशा दबाव बनाये रखना, गंदी राजनीति करना, विरोध करने वालों का कत्ल करना, गालियाँ देना, गन्दे शब्दों का प्रयोग करना, मकान और खेती का नीलाम करना, आदि विविध आयामों में जमींदार दलितों का शोषण करते हैं| इसके वजहसे दलितोँ को बहुत सारे कठिनाइयाँ से गुजरना पड़ता हैं| उनका अनेक प्रकार से शोषण किया जाता हैं | एक दलित इंसान जब कुछ करने की कौशिश करता हैं आगे बढ़ना चाहता हैं

तब उन्हें बहुत सारी कठिनाइयाँ से गुजरना पड़ता हैं | उन्होंने सताया जाता हैं मार पिटा जाता हैं | उनका खुदका कोई अस्तित्व नहीँ होता| वह जमींदारों ठाकुरो के राय पर चलना पड़ता हैं और अगर उनका कहना नहीँ मन तो फिर उनका शोषण किया जाता हैं | दलितों को उनके घर कम पर रखकर उनसे बहुत सारा कम करवाया जाता हैं फिर उसकी फूटी कौड़ी भी उन्होंने नहीं दी जाती और अगर दलित स्त्री उनके घर कम करने जाती तो उसका शोषण किया जाता उसके साथ बुरा बर्ताव किया जाता फिर भी वह कुछ नहीं कर सकती | उनका गाव में पाक मकान नहीं होता हैं |उनके आस पास की गंदगी की वजहसे उन्होंने बहुत सारी बीमारीयों से गुजरना पड़ता हैं|

अगर कोई दलित इंसान शिक्षा प्राप्त करना चाहता हैं तो उस दबाया जाता हैं क्योकि आगे जाकर वह उनके विरुद्ध खड़ा हो सकता हैं |भारतीय समाज व्यवस्था में स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर काल में जमींदार वर्ग अत्याचार और शोषण का प्रतीक रहा है। यह वर्ग सत्ता और धन के बलपर सामंतीवादी प्रवृत्ति को बनाये रखने की

कोशिश करता हुआ दिखाई देता है। कानून से जमींदार प्रथा समाप्त हो गई है परन्तु जमींदारों की ऐंठन अभी भी दिखाई देती है। उनकी नई-नई प्रवृत्ति, शोषण की नीति, दमनचक्र के हथकंडे आदि के दर्शन उपन्यासों में होते हैं। दलित किसानों की जमीन हड़प करना, उनसे बेठबिगारी लेना, मजदूरी देने से इंकार करना, उनकी नारियों की अस्मत को दिन-दहाड़े लूटना, उन पर झूठे आरोप लगाकर उन्हें जेल भेजना, उनका कत्ल करना गंदी राजनीति का सहारा लेना, पुलिसों को अपना पक्षधर बनाकर लोगों पर जुल्म करना आदि कई रूपों में दलितों का शोषण दिखाई देता हैं| उनपर धर्म परिवर्तन का दभाव डाल जाता हैं अगर उन्होंने उनकी बात नही मानी तो उनका खाना पीना बंद करवाया जाता हैं उनकी बच्चों की अवस्था

को देखकर वह धर्म परिवर्तन के लिए मान जाते हैं |इन लोगों को घोर दुःख से गुजरना पड़ता उन्हें गाँव से बाहर बसने दिया जाता । ये लोग सिवाय छप्पर या मड़ैया के अपने लिए घर नहीं बना सकते थे। इनकी स्त्रियाँ सोने-चाँदी के गहने नहीं पहन सकती थी। ये लोग गेहूँ आदि अन्न और घी, दूध आदि पौष्टिक पदार्थ नहीं खा सकते थे। इन लोगों से महाअधम और दिन-रात अत्यन्त कठोर सेवा-टहल के काम लिये जाते थे। और उसके बदले में पैसा न देकर खाने के लिए जूठन अन्न और फटे-पुराने कपड़े दिये जाते थे। समाज में इनका घोर अपमान किया जाता था कि यदि इन्हें कोई छू जाता तो उसे कपड़े सहित स्नान करना पड़ता था, इसलिए इनका नाम 'अछूत' रखा गया था | इस वजहसे उन्होंने बहुत तकलीफ होती थी |साहित्य और सामाजिक जीवन का परस्पर संबंध होने के कारण समाज के हर वर्ग का उनके जीवन का उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का चित्रण साहित्यकारों ने हिंदी उपन्यासों में किया हैं उन्होंने जो वास्तविक जीवन में देखा और अनुभव किया हैं वह अपने उपन्यासों के माध्यम से दर्शने की कौशिश की हैं| | कई सारे रचनाकराने दलित उपन्यास लिखे हैं परंतु कुछ उपन्यासों में उतनी गहरी नही होती पर कुछ ऐसे उपन्यास हैं जिनमे दलित जीवन की सचाई दिखाई देती हैं वह यथार्थ वादी उपन्यास माने जाते हैं | दलित उपन्यासों में भारत समाज व्यवस्था का शोषित, अंग दलित समाज हैं साहित्यकार युग चेतना के साथ साथ युग जनजीवन का चित्रण भी करता हैं | हिंदी दलित उपन्यासों में दलित जीवन में स्थित अंधविश्वस्, रूढ़ि परम्परा, उत्सव पर्व, शिक्षा, जातिवाय वेवस्था, जतीयभेद, पर रचनाकारों ने मूल्य प्रकाशन डाल हैं| उपन्यासों में दलित जीवन में स्थित विभिन्न अंधविश्वास उनकी पाप पुण्य संबंधी धारणाओं, मंत्र तंत्र, भूत संबंधी अंधविश्वासों को

चित्रत किया हुआ मिलता हैं| स्वातंत्र्योत्तर काल के उपन्यास में मानव जीवन, समाज जीवन, नारी जीवन की व्यथा-कथा, विवशता, शोषण, नारी जीवन, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थिति में होने वाला परिवर्तन आदि सभी बातों का

यथार्थ रूप में चित्रण होने लगा। सामाजिक प्रतिबद्धता, साहित्य की विशेष प्रवृत्ति रही है। सजग साहित्यकार वही है जो समकालीन जीवन का आकांक्षाओं का चित्रण करता है। हिंदी दलित उपन्यासों में शिक्षित अशिक्षित, अमीर गरीब, मालिक मजदूर, शोषक -शोषित, पुंजीपति- किसान भेद भाव को रेखांकित किया गया हैं|

मानव ने अपनी विभिन्न जैविक तथा मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामाजिक व्यवस्था का निर्माण किया। मनुष्य से निर्मित इस सामाजिक व्यवस्था में प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे पर अवलंबित है। इसी कारण समस्त मानव अपना जीवन समूहों में रहकर बिताता है। विभिन्न सामाजिक समूहों में रहकर ही मानव के गुण-दोषों का स्पष्टीकरण, विकास और परिष्कार होता है। इसी से ही समाज और संस्कृति की प्रगति भी होती है। प्रत्येक मनुष्य पर ऐसे सामाजिक समूहों का प्रभाव दिखाई देता है। हर एक व्यक्ति की रहन-सहन, विचार-भाव आदि पर प्रभाव रहता है। इसी कारण फ्रांसिस ई. मेरिल ने मानव को एक 'सामाजिक प्राणी' (ग्रुप एनीमल) कहना उचित समझा है।' भारतीय समाज व्यवस्था में मनुष्य के जन्म से लेकर अंत तक अनेक संस्कार किये जाते हैं। बच्चा जन्म लेते ही उसका नामकरण, विवाह से लेकर मृत्यु के उपरान्त भी उस पर विधि पूर्वक संस्कार होते हैं। इसी कारण भारतीय संस्कृति को आज सारे विश्व में उच्च संस्कृति के रूप में माना गया है। वस्तुतः समाज का निर्माण मनुष्य से ही हुआ है। धीरे-धीरे समाज में कुछ ऐसे नियम तैयार किये गये जिससे मानव सही दिशा में अपना जीवन यापन करे, लेकिन अज्ञानी, अनपढ़ जनों ने सामाजिक पहलुओं को अधिकतर महत्व दिया। परिणामतः समाज, संस्कृति के विश्वास के बदले अंधविश्वास का निर्माण हुआ। यही अंधविश्वास समाज में आज तक दिखाई देते हैं।उपन्यास साहित्य में मूल्य संक्रमण, युग-परिवर्तन, नई विचारधारा, बदली हुई सामाजिक व्यवस्था, परिवर्तित मानसिकता और नैतिक मूल्य आदि का चित्रण होता है। दलितों का जीवन चित्रित होना इसका ही प्रमाण है। उपन्यासों में गाँव, नगर, महानगर, झुग्गी-झोपड़ी आदि का जन जीवन चित्रित हो रहा है। उनके साथ-साथ

समाज से उपेक्षित, पीड़ित, लांछित, अपमानित दलित जीवन को भी चित्रित करने का महत्कार्य उपन्यासकारों ने किया है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक स्तर पर होने वाला परिवर्तन भी दर्शाया है। इस दृष्टि से हिन्दी उपन्यास साहित्य आज भी महत्वपूर्ण रहा है।

साहित्य और समाज का अटूट रिश्ता रहा है जिस प्रकार समाज उन्नत होगा, साहित्य भी उसी प्रकार विकसित होगा, "साहित्य वस्तुतः जीवन और समाज से भाव सामग्री लेकर अपने शरीर या स्वरूप का निर्माण करता है। अच्छा साहित्य और अच्छा समाज जीवन को समृद्ध और उन्नत बनाता है। साहित्यकार समाज जीवन का एक अंग होता है। जो देखता है उसी का वह चित्रण भी करता है। सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक एकता में साहित्यकार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हिन्दी साहित्यकारों ने उसे निभाया है। दलित, शोषित, किसान, नारी, विधवा नारी, वेश्या, बंधुवा मजदूर आदि सभी वर्गों का यथार्थ चित्रण साहित्य में करके उनकी व्यथा को वाणी देने का प्रयास किया है।

आलोच्य उपन्यासों में दलित, उनका जीवन, उनका होने वाला शोषण, उनका सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक जीवन और उनका होने वाला धर्म परिवर्तन, भौतिक सुविधाओं का अभाव, धीरे-धीरे होने वाला परिवर्तन, दलित और शिक्षित दलितों की बदली हुई मानसिकता आदि को चित्रित किया है। इसी कारण दलित जीवन और उनका साहित्य में होने वाला चित्रण एक चिंतन का विषय रहा है ऐसा प्रतीत होता है।

नागरी जनजीवन की अपेक्षा ग्रामीण जनजीवन में ऐसे अंधविश्वास का पालन किया जाता है। ग्रामीण लोग अनपढ़ होने के कारण कुछ मुट्ठी भर लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए उनका शोषण किया, जिनमें जमींदार, धार्मिक व्यक्ति हैं। लोग रूढ़ि-परंपरा की जंजीर में अटक गये। रीति-रिवाज का वे जी-जान स पालन करने लगे। इसी कारण उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होती गई। व्यवसाय के आधार पर वर्ण व्यवस्था निश्चित की गई। परिणामतः छुआछूत की समस्या बढ़ गई। समाज में निरंतर पीसा जाने वाला वर्ग अछूत समझा गया। अतः उन्हें धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक अधिकारों से वंचित रखा गया। जातीयता की निर्मिती हो गई। धीरे-धीरे इसी जातीयता ने भयावह रूप धारण कर लिया। ग्रामीण जन-जीवन में जातीयता की पकड़ इतनी मजबूत हो गई कि लोग एक दूसरे को जाति से पहचानने लगे। इसी तरह ग्रामीण जनजीवन में बहुमुखी समस्याओं का निर्माण हुआ। इन समस्याओं को प्रकाश में लाने का, युवकों में चेतना जागृति का प्रयास, साहित्यकारों ने किया।

सामाजिक जीवन के विकास के फलस्वरूप सामाजिक समस्याओं का निर्माण होता है। जब विकास की धारा प्रवाहित होती है तब उसमें रूकावट के रूप में कई शक्तियाँ कार्यरत रहती हैं, जो समस्याओं का रूप लेती हैं। मानवी जीवन का विकास भी इसके लिए अपवाद नहीं रहता। मानवी विकास में बाधा बनकर आने वाली समस्याओं को सुलझाने का कार्य मानव करता है। सामाजिक जीवन में गरीबी, भुखमरी, विषाद, उत्पीड़न, अनमेल विवाह, उपेक्षा, अत्याचार, अमानवीयता, विधवा विवाह तथा अन्यान्य समस्याएँ और विसंगतियाँ विद्यमान हैं।

साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा समाज जीवन का चित्रण करने के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है। सामाजिक समस्या का प्रभाव

समाज पर होता है। समाज से जुड़ी तथा समाज को प्रभावित करने वाली समस्या को 'सामाजिक समस्या' कहा जाता है। विभिन्न समाज शास्त्रियों ने सामाजिक समस्या की अवधारणा स्पष्ट करते हुए अपना दृष्टिकोण इस प्रकार स्पष्ट किया है- "फूलर और मेयर्स ने 'सामाजिक समस्या को सामाजिक मानदंड माना', 'रैनहार्ट ने समाज का एक खण्ड या बड़ा भाग जिससे प्रभावित होता है। उसे सामाजिक समस्या माना है। रॉब ने मानव संबंधों को संकट में डालने वाली स्थिति को सामाजिक समस्या माना।" डॉ० शशिभूषण सिंहल कहते हैं- "सामाजिक उपन्यास समाज के विभिन्न क्षेत्रों, स्त्री-पुरुष के संबंधों, परिवार, जाति-सम्प्रदाय, वर्ग, राष्ट्र, अर्थदशा, रीति-धर्म, सभ्यता, संस्कृति आदि का चित्रण करते हुए उनके लक्ष्य तक उनकी समस्याओं का निरूपण करता है।" यह कथन यहाँ यथार्थ लगता है। हिन्दी उपन्यासकारों ने इस दृष्टि से अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्यकारों के कार्य के बारे में डॉ. सुनंदा पालकर का विचार महत्वपूर्ण लगता है। वह मानती हैं- "जीवन की विविध समस्याओं का उद्घाटन और उसका हल यद्यपि हर समय अपेक्षित नहीं होता, फिर भी आज के उपन्यास का प्रधान काम है जीवन की जटिलताओं का चित्रण और विश्लेषण। आलोच्य उपन्यासकारों ने भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

यह पर कुछ दलित जीवन उपन्यास मैंने लिए हैं जिनके माध्यम से हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन किस प्रकार हैं यहा संक्षिप्त में अध्ययन किया हैं |

<u>3.1.2- खारे जल का गाँव</u> (९६७२) यह उपन्यास डॉ भगवती प्रसाद द्वारा लिखित हैं| इस पूरे उपन्यास में अंधविश्वस् को मानकर चलने वाले गाँव के लोगो की तरफ इशारा करता हैं जो अ शिक्षित लोग अंधविश्वास का किस प्रकार से शिकार होते हैं | उनके गाव में जब अकाल पड़ जाता हैं जब बारिश नही होती तब किस प्रकार से उनके मन में ब्राहमणों द्वारा हल चलाने से पानी परसेगा यहाँ तक का अंधविश्वास इस उपन्यास में दिखाया गया हैं की किस प्रकार से दलित लोग उच्च वर्ग पर निर्भर होते हैं यह इस उपन्यास में दिखाई देता हैं |

3.1.3- 'एकलव्य'- 'एकलव्य' में चन्द्रमोहन प्रधान जी ने महाभारत की कथा का आधार लेकर निषाद जाति के संदर्भ में समाज में स्थित अंधश्रद्धा का उल्लेख किया है। एकलव्य हीन, अछूत, निषाद जाति का होने के कारण उसे शिक्षा व्यवस्था से दूर रखा जाता है। आचार्य द्रोण द्वारा उसे शिष्यत्व न देना, उसे धनुर्विद्या का ज्ञान न देना |एकलव्य' उपन्यास में चंद्रमोहन प्रधान ने महाभारत की कथा का आधार लेकर सवर्णों के लिए शिक्षा व्यवस्था का होना, इस प्रथा पर प्रकाश डाला है। निषाद एकलव्य को जातिव्यवस्था के कारण शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है। गुरूदक्षिणा इस प्रथा का शिकार होता है। गुरूदक्षिणा प्रथा के कारण गुरू द्रोणाचार्य एकलव्य से दाहिने हाथ के अंगुष्ठ की मांग करते हैं, एकलव्य प्रथा के अनुसार अंगूठे का दान करता है, यहाँ यह प्रथा शोषण और जातीय भेदाभेद का आयाम लगती है।है

3.1.4-आग-पानी आकाश-' उपन्यास में रामधारी सिंह दिवाकर जी ने श्वसुरद्वारा युगेश्वर भागवत और मंत्री मामा के अनुरोध करने पर भी जब नहीं लाते तब लड़की का दूसरे स्थान पर 'चुभौनी' कर दिया जाता है।आग-पानी आकाश' उपन्यास में भी जाति भेदाभव को स्पष्ट करने का रामधारी सिंह दिवाकर जी ने प्रयत्न किया है। यहाँ पर दो प्रकार के जातिभेद दिखाई देते हैं, एक सवर्णों द्वारा निम्न जातियों के प्रति भेदभाव, दूसरा शिक्षित दलितों द्वारा दलित जाति के प्रति भेदभाव पूर्ण बर्ताव । इस उपन्यास में उपन्यासकार ने आधुनिक दलितों द्वारा भी उनके स्वजाति के लोगों के साथ भेदभावपूर्ण नीति और शोषण की कहानी को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है।

यहाँ स्पष्ट है दलित समाज में स्थित बलि प्रथा, मिलौनी रस्म, अंजुरी भरने की रस्म, करवा प्रथा, रखैल प्रथा, बेगार प्रथा, चुभौनी प्रथा तथा विवाह और मृतक संस्कार के अवसर पर निभाई जाने वाली रूढ़ि-परंपरा, जाति-पंचायत व्यवस्था

आदि का चित्रण हुआ है। बलिप्रथा, बेगार प्रथा और मिलौनी प्रथा शोषण का आयाम जैसे दलित जीवन के पीड़ा को हिंदी दलित उपन्यासों में दर्शाया गया हैं|

3.1.5-मोरी की ईट्ट -उपन्यास मोरी की ईंट' उपन्यास में जातीय भेदभाव को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में मेहतर समाज की कथा-व्यथा व उनके संघर्ष को प्रमुखता दी गई है। मेहतर समाज की मंगिया को जब हेल्थ आफीसर डॉ. सुरेन्द्र पांडे की कोठी पर नियुक्त किया जाता है तब डाक्टरनी द्वारा मंगिया की प्रशंसा की जाती है, उसे वह इमानदार और कर्तव्यनिष्ठ समझकर सम्मान करती है। इस पर मंगिया उससे कहती है कि-'आप एक मेहतरानी को इतना ऊँचा चढ़ाकर बैठा देंगी तो लोग क्या कहेंगे ?' इससे स्पष्ट होता है कि निम्न जाति के लोग अपने आपको मान-सम्मान के हकदार भी नहीं समझते। मंगिया का कथन दलितों की मानसिकता को दर्शाता है|

3.1.6पठार पर कोहरा -

राकेश कुमार सिंह का सन् 2003 में प्रकाशित 'पठार पर कोहरा' उपन्यास झारखंड के जनजातिय जीवन पर लिखा एक सशक्त उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में रचनाकार ने शोषण उत्पीड़न और अन्याय के विभिन्न हथकंडों को उजागर किया हैं ।

3.1.7पिछले पन्ने की औरतें -

महिला लेखिका शरद सिंह का 'पिछले पन्ने की औरतें' यह उपन्यास 2005 में प्रकाशित हुआ, जो मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड की बेड़ियाँ जनजाति की महिलाओं को केंद्र में रखकर लिखा गया। बेड़नियों का पेशा परंपरा से नाच गाना ही रहा है। सदियों से उपेक्षित, वंचित, उत्पीड़ित एवं आर्थिक बदहाली का जीवन जी रही

बेडियाँ समाज की औरतों के जीवन सत्य को इस उपन्यास में उजागर किया गया है। उपन्यास बेडियाँ समाज की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान तक का विस्तृत लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। स्त्री-विमर्श पर आधारित इस उपन्यास में बेड़नियों की जीवनदशाओं एवं उनसे जुड़ी समस्याओं को बेबाक रूप में प्रस्तुत किया है। समाज में इन औरतों की उपस्थिति को तो महसूसा जाता है, किन्तु इनके प्रति संवेदना कभी कभार ही नजर आती है। अधिकतर लोगों के लिए ये औरतें नाचने गाने वाली मात्र है, उन्हें हर कोई भोग्या के रूप में भोग सकता है।उपन्यास की नचनारी ठाकुर के बच्चे की माँ होने वाली है। जब ठाकुर से वह इसके बारे में बतियाती है तब उदासीन भाव से उसके हाथ में कुछ पैसे थमाते हुए ठाकुर कहता है, "जब पैदा हो जाए तो सूचित करना जब आवश्यकता हो तो और खर्चा पानी माँग लेना।" ब्रिटीश सरकार ने अपराधिक जनजाति अधिनियम के अंतर्गत अनेक जनजातियों को जरायमपेशा करार दिया, जिनमें से एक बेड़ियाँ जनजाति भी है। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान ने इस अधिनियम को हटा दिया है, किन्तु ऐसी अनेक जनजातियाँ है जो आज भी इस कलंक पीड़ा को ढो रही है। समाज की पूर्वाग्रह दूषित मानसिकता ने उनको गैर कानूनी एवं अपराधपूर्ण कार्यों के लिए प्रेरित किया है, इस पर भी प्रस्तुत उपन्यास प्रकाश डालता है।

3.1.8 मुक्तिपर्व उपन्यास -

मोहनदास नैमिशराय का यह प्रथम उपन्यास है जो 2004 में प्रकाशित हुआ है। इसमें मोहनदास, के दलित वर्ग की जागरूकता का चित्रण है |उपन्यास में एहसास होतापाचार, भेदभाव के प्रति संतुलनपूर्वक मुक्ति का मार्ग ढूँढ़ते हुए पात्र है, जिसमें उनक, अल्प हुए आख्यान भी है और वर्तमान के प्रति संघर्ष नजर आता है। उपन्यास में नवाब, अलीवर्दी, बंशी, रामलाल, पंडित और सुनीत, सुमित्रा मुख्य पात्र है। लेखक ने दलित समाज की नई-पुरानी पीढ़ी में हो रहे परिवर्तन की प्रक्रिया को बहुत ही ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया है। बंशी परंपरागत सामंतवादी ताकतों के विरूद्ध संघर्ष करते हुए अपने पुत्र के सुनहरे भविष्य के लिए तत्पर

दिखाई देते हैं। लेखक समाज में चेतना लाने के लिए शिक्षित बनों का विकल्प देकर सवर्ण जातियों के अत्याचार और उत्पीड़न से बचने का रास्ता दिखाते है। यह भी सच है कि वह अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़कर ही समाज में समानता पा सकता है।

उपन्यास का पात्र बंशी सामंती-जमींदारी व्यवस्था को नकारकर शोषण की गिरफ्त से छूटकर अपने

पुत्र सुनीत को शिक्षा प्राप्ति के उद्देश्य से उसके और समाज के जीवन में परिवर्तन लाना चाहता है।

सदियों से दासतां की जंजीरों में पड़ा हुआ दलित समाज आजादी की बेला से मुखरित होकर मुक्ति की कामना करते हुए जीवन को नई गति को दर्शाया है। हिंदी दलित उपन्यासों में जातीय पंचयत, राजनीतिक स्थिति, को भी चित्रित किया हैं|

हिंदी दलित उपन्यासों में जातीय पंचायत, राजनीतिक स्थिति, को भी चित्रित किया हैं|

खरे जल का गाँव इस उपन्यास के मध्यम से जातीय पंचायत के संबंधित उच्च वर्ग के लोग दलितों पर किस प्रकार झूठे आरोप लगाकर उसको फसाते हैं | जादा दलित उपन्याकरोने राजनीतिक और जातीय व्यवस्था का सच पाठकों के सामने लाने का प्रयास किया हैं|

सन्दर्भ- हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन (डॉ शभूनाथ द्विवेदी) प्रकाशक पूजा पब्लिकेशन

6-B, बौद्धनगर, नौबस्ता(संस्करण 2013) पृष्ठ १३९,१४०,१४४,१५०,१४२,१७०,१४५

-एकलव्य चंद्रमोहन प्रधान १६६७ अनुराग प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ १२३

- मदन दीक्षित (मोरी की ईट) सं १६६६ प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ ११७,११६

21 वी सदी के कथा साहित्य में दलित चेतना (डॉ सुनीता कावले) प्रकाशन रोली प्रकाशन संस्करण प्रथम 2015 पृष्ठ ५६

वही पृष्ठ ५७

सन्दर्भ- हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन (डॉ शभूनाथ द्विवेदी) प्रकाशक पूजा पब्लिकेशन

6-B, बौद्धनगर, नौबस्ता(संस्करण 2013) पृष्ठ १३९,१४०,१४४,१५०,१४२,१७०,१४५

-एकलव्य चंद्रमोहन प्रधान १६६७ अनुराग प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ १२३

- मदन दीक्षित (मोरी की ईट) सं १६६६ प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ ११७,११६

18

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ१३८

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ१८२

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ१८३

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ२३४

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ२३५

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ२३६

4 अध्याय

धरती धन न अपना उपन्यास में दलित समस्या

4.1परिचय

जगदीशचंद्र हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में नया किन्तु चर्चित नाम है। उन्होंने अब तक जो कुछ भी लिखा है वह भारतीय गाँव के उत्पीड़न, शोषण और गरीबी की त्रासदी और समस्याओं को अपने धरती धन न अपना उपन्यास में अपने विद्रोही भाव को व्यक्त किया हैं जो उन्होंने किशोर अवस्था में उन्होंने जो अनुभव किया हैं उनके विचार को इस उपन्यास में लिखा हैं| जगदीश चन्द्र जी का सबसे चर्चित उपन्यास 'धरती धन न अपना' रहा हैं । उपन्यास का प्रकाशन १९७२में हुआ |धरती धन न अपना' उपन्यास में जगदीश चंद्रजी ने अपने किशोरावस्था (बचपन) में अपने नलिहाल गाँव-रल्हन (पंजाब) के शोषित-पीड़ित हरिजनों की अदम्य वेदना को चित्रित किया है।

इस उपन्यास में हरिजन, कमीन, लोहार, बाजीगर, परजापत, महाजन, साहूकार और चौधरियों के जीवन का चित्रण है। इसमें निम्न वर्ग के प्रमुख पुरुष पात्रों में काली (नायक), बाबे फत्तू, ताये बसन्ता, जीतू, मंगू, निक्कू, नंदसिंह, अमरू, बग्गा, संतू, दासू इत्यादि का तथा निम्न वर्ग की प्रमुख स्त्री पात्रों में काली की चाची प्रतापी, निक्कू की पत्नी प्रीतो, ज्ञानों, लक्ष्छो, प्रसिन्नी, जस्सो इत्यादि का चित्रण किया गया है। उच्चवर्णों के पात्रों में चौधरियों में से हरनाम सिंह, हरदेव सिंह, धड्डम चौधरी उर्फ नत्था सिंह, जाटों का दिलदार सिंह, लालू पहलवान, दिलसुख तथा दुकानदार छज्जूशाह, प्राइमरी अध्यापक मुंशी शिवराम, पंडित सखाराम, महाशय तीरथराम, डाक्टर विशनदास, पादरी अचिन्त्य राम और सरकारी नौकर

में गाँव के पटवारी इत्यादि पात्रों का चित्रण मुख्य रूप से किया गया है। गाँव के सभी स्तर के, सामाजिक वर्ग के पात्रों का, उनकी मानसिकता, सामाजिकता का चित्रण हुआ है। यह उपन्यास ग्रामीण समाजशास्त्र के दायरे में घूमती हुई धरती से जुड़े लोगों का सामाजिक, आर्थिक दस्तावेज है। सामाजिक यथार्थता का स्वर यहाँ मुखरित होता है। पंजाब प्रान्त से जुड़े एक गाँव की कहानी, विकासोन्मुखी गाँव में सामाजिक संबंधों में न आने वाला परिवर्तन, अत्याचारों का सिलसिला, झगड़े, जमींदार, साहूकारों की मनमानी ज्यों की त्यों रही है, आदि का चित्रण किया है। । इस गाँव में सामाजिक संबंधों का स्तर-खेत-मजदूर और पूँजीवादी जमींदार के न होकर भूदासों और सामंती जमींदारों का है। जमींदारों के यहाँ मजदूरी करने वाले 'दलित' मजदूरों के विद्रोह की यह कहानी है। यहाँ जीत किसी की भी हो मगर सामन्ती उत्पीड़न, शोषण के खिलाफ भूदासों, दलितों का यह आंदोलन समाज को नई दिशा देता है। यह घटना एक क्रांतिकारी घटना थी।संघर्ष की शुरूवात तो हो चुकी है। इसमें सफलता न मिली परन्तु सामंती मूल्यों को खत्म करने की चुनौती स्वीकार की है। गाँव के हरिजनों के जीवन से जुड़ी यह कहानी ग्राम जीवन का यथार्थ चित्रण करने में सफल रहे हैं|

इस संघर्ष से यह स्पष्ट होता है कि जमीन मालिकों पर दबाव डालने के लिए स्वयं दलितों का नेतृत्व अत्यन्त आवश्यक है। उपन्यास में पात्रों का बाहुल्य होने पर भी मुख्यतः चौधरियों और चमारों के पात्र ही उपन्यास को नायकत्व देते हैं सभी पात्र अपने-अपने जातीय संस्कारों एवं वर्ण विशिष्टता पर अडिग रहते हैं।

उपन्यासकार ने अपने ग्रामीण अनुभव और संवेदना को उपन्यास में सर्वोपरि स्थान देने का प्रयत्न किया है। ऐसा लगता है, क्योंकि उपन्यास में मुख्य रूप से ग्रामीण अंचल में सदियों से जुल्म की चक्की में पिस रहे ग्रामीण हरिजनों और भूमिहीन मजदूरों की समस्याओं को केन्द्र मानकर यह उपन्यास लिखा है। इस उपन्यास में लेखक सवर्णों और हरिजनों की एकांगिता और सड़ांध को पूरी निर्ममता से खोलता है जिसके कारण ग्रामीण जीवन का कोई भी पात्र अनछुआ नहीं रह जाता ऐसा

दिखाई देता है। क्योंकि उपन्यास की कथावस्तु में ग्रामीण जीवन के सभी पहलुओं का वर्णन मिलता है। और उनकी चली जाती है।

धरती धन न अपना उपन्यास में साधनहीन, भाग्यवादी, पराश्रित, अनपढ़ और अभावग्रस्त हरिजनों के जीवन को लेखक ने अंतरंगता से प्रस्तुत किया है। उपन्यासकार अपने कथा-यथार्थ के लिए और मर्म स्पर्श के लिए बेजोड़ माने जाते हैं। जिससे यह उपन्यास और भी महत्वपूर्ण हो गया है। उपन्यासकार ने इस उपन्यास के माध्यम से भूमिसमस्या के निरंतर जटिल होते जाने के मूल कारणों पर अपनी ही जमीन से रोशनी फेंकने का अनूठा कार्य किया है। उपन्यासकार ने कहा है कि- 'मनुष्य को मनुष्य न रहने देने वाले सामंती संस्कारों का खात्मा जब तक नहीं होगा, तब तक नैतिकता और कानून के तमाम मानदंडों के बावजूद इन्सान और इन्सानियत का बध होता रहेगा। श्री जगदीशचंद्रजी ने अपनी समग्रता में यह उपन्यास एक गाँव की कथा को लिखकर उसके बहाने उन्होंने पूरे भारत देश के ग्रामीण हरिजनों के शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, अपमानित, लांछित जीवन की व्यथा-कथा चित्रित की है।

प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने अपने बचपन में ननिहाल के रल्हन गाँव जो कि पंजाब प्रान्त में आता है, उस अंचल में चल रहे भेदभाव, सामाजिक दुरावस्था, आर्थिक अभाव के कारण हरिजन लोगों के ऊपर होने वाले शोषण तथा उनकी दयनीय जिन्दगी की कहानी को, जो कि लेखक के किशोरावस्था की अविस्मरणीय स्मृतियों और उनके दामन में छिपी एक अदम्य वेदना को मार्मिक ढंग से चित्रित किया हैं |

4.1.1उपन्यास में अभिव्यक्त समस्याएं :-

चमादड़ी (घोड़ेवाहा गाँव) में हरिजनों की बस्ती और चमादड़ी के लोगों के रहन-सहन को बहुत ही नजदीक से देखने के बाद लेखक ने उसका बड़ी कुशलता से

चित्रण किया है। हरिजनों की बस्ती जिसे लोग 'चमादड़ी' के नाम से संबोधित करते हैं। यह घोड़ेवाहा गाँव के बाहर हरिजनों की बस्ती है। बस्ती और बस्ती के लोगों का, उनके रहन-सहन का लेखक ने इस प्रकार से चित्रित किया है- "छोटे-छोटे कच्चे मकान, सीलन भरी अंधेरी कोठरी, मटमैले रंग के छोटे-छोटे कोठे, तंग गली, मुहल्ले के बाहर गोबर और कूड़े के ढेर कच्ची गाँव में जमींदार चौधरी हैं। एक-दो दुकानदार बनिये हैं, और जमीदारों के घरों में काम करने वाले चमार हैं। चौधरी लोग बेबात चमारों को मारने तथा गाली गलौज भी करते रहते हैं। जमींदारों के अत्याचार, शोषण के आयाम पूर्ववत ही हैं। महाजन, साहूकार, जमींदार, ग्रामवासियों का, दलितों का पहले जैसा ही शोषण कर रहे हैं। बिना कसूर, बिना अपराध किये मजदूरों की पिटाई करना जमींदारों की नीति बनी है। उपन्यास के प्रारंभ में चौधरी हरनाम सिंह के खेतों की फसल का जानवरों द्वारा नुकसान होने के कारण संतू तथा जीतू की चौधरी खूब पिटाई करते हैं। उपन्यासकार ने इसका वर्णन करते हुए लिखा है, बिना किसी कसूर के ही चौधरी ने संतू को पकड़कर पीटा इस से पता चलता हैं की बिना किसी कसूर के दलित पर किस प्रकार से अत्याचार और उनका शोषण किया जाता हैं की | इस प्रकार के कई सारे दौर से उन्हें गुजरना पड़ता हैं| जब कली अपना पक्का मकान बनाना चाहता हैं तब उसके कामों में किस प्रकार से उस सताया जाता हैं इससे यह पता चलता हैं कि एक गरीब दलित लड़का खुदका कुछ करना चाहता हैं तब उस सताया जाता हैं बिना चौधरी के गाँव में चमदियों का खुदका मकान नही हैं यह भी हम देख सकते हैं की एक दलित आदमी को किस प्रकार से दबाया जाता हैं उनके आकांक्षाओं को किस प्रकार दभाया जाता हैं| उनके साथ बुरा बर्ताव किया जाता |

4.1.2-भूत-प्रेत, चुडैल-डायन की समस्या

आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति और सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव से दूर दलित का जवीन भ्रम, भय एवं अज्ञान से संचलित रहा है। मानसिक दुर्बलता और अंधश्रद्धा का समन्वित रूप भूत-प्रेत, चुडैल-डायन संबंधी धारणा ही है। दलितजनों का आज भी इस पर विश्वास रहा है।

दलित जनजाति बीमारी दूर करने के लिए, बांझपन हटाने के लिए, संकट से मुक्ति के लिए भूत-प्रेत का आधार लेते हैं। असामायिक मृत्यु, अतृप्त आत्मा भूत योनि में प्रवेश करती है ऐसी उनकी धारणा है।

अमरसिंह रणपतिया के मतानुसार- शिक्षा-प्रचार और प्रसार से ऐसे विश्वासों में ढील आना स्वाभाविक है। कई अंधविश्वास सुसंस्कृत लोगों पर भी छाये हुए हैं। विज्ञान के चमत्कारों ने इस प्रकार के विश्वासों को अवश्य झकझोरा है।गाँवों में कोई अघटित भयावह, दानवी घटना घटती है तो उसका सम्बन्ध भूत-पिशाच के साथ जोड़ने की उनकी प्रवृत्ति है। वैसे ही धरती धन न अपना उपन्यास में धरती धन न अपना' उपन्यासमें जगदीशचंद्र जी ने पंजाब प्रांत के रल्हन गाँव में रहने वाले हरिजनों में स्थित भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन संबंधी विचारों को स्पष्ट किया है। किसी को जिन्दा जलाने से उसका भूत बनता है तथा वह भूत किसी जीवित व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करता है जिसके कारण व्यक्ति बीमार पड़ जाता है ऐसी उनकी धारणा है। बीमार चाची प्रतापी को देखकर रख्खा कहता है- "डाकू हरबेल सिंह को पुलिस ने जिन्दा जलाया था। उसी का भूत चाची की शरीर में प्रवेश कर गया है।" इस भूत को उतारने के लिए धूप, लाल मिर्च, कुछ खाने-पीने का सूखा राशन, दूध और पैसे मंगाया जाता है। मंत्र पढ़कर जमीन पर चिमटा पटककर भूत निकालने की बात कही जाती है। भूत निकालने के बाद पीड़ित व्यक्ति को पाँच दिन तक कोई सफेद चीज नहीं दी जाती। यदि सफेद चीज खाने को दिया जाय

तो भूत फिर शरीर में प्रवेश करेगा। इस धारणा के पीछे उनका अंधविश्वास और उनकी कमजोर मानसिकता दिखाई देती है।

<u>4.1.3--तंत्र- मंत्र, झाड़-फूँक, जड़ी-बूटी, जादू-टोना सम्बन्धी अंधविश्वास की समस्या-</u>

दलित समाज अज्ञानी, अंधश्रद्ध होने के कारण भूत-पिशाच संबंधी मान्यताएँ उनमें रही. है। परिणामतः उस पर उपाय के रूप में मंत्र-तंत्र, जादू-टोना तथा बीमारी दूर करने के लिए झाड़-फूँक-जड़ी-बूटी का प्रयोग किया जाता है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, चिकित्सा सुविधा का अभाव होने के कारण इसे बढ़ावा मिल रहा है दलित लोग दवाइयों की अपेक्षा दुवा पर अधिक विश्वास रखते हैं। जड़ी-बूटी का प्रयोग करते हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में दलितों में स्थित इस अंधविश्वास तथा मान्यता पर गहराई से सोचा है। आलोच्य उपन्यास इसके प्रमाण हैं। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में जगदीशचंद्र जी ने मंत्र-तंत्र, झाड़-फूँक-जड़ी-बूटी, जादू-टोना संबंधी अंधविश्वास पर प्रकाश डाला है। काली की चाची जब बीमार होती है, तब लोग कहते हैं- डाकू हरवेल की मृतात्मा ने उसके शरीर में प्रवेश किया है।

चाची को दवा-दारू देने पर भी जब कोई लाभ नहीं हुआ तब झाड़-फूँक-जादू-टोना करने वाले मांत्रिक रक्खा को बुलाया जाता है। वह बताता है कि इसके शरीर में प्रेत ने वास किया है। जब कोई नया मकान बनाया जाता है तो उसमें प्रेत आ जाते हैं। प्रेतों को निकालने के लिए मंत्र-तंत्र-झाड़-फूंक का करना आवश्यक है।

<u>4.1.4 (जमींदारों द्वारा शोषण समस्या)</u>

भारतीय समाज में जाति-व्यवस्था का स्थान महत्वपूर्ण है। जातीय व्यवस्था के कारण समाज की एकता खंडित हो रही है। समाज में ऊँच-नीच, सवर्ण-दलित आदि

कई भेद खड़े हो गये हैं। इस सामाजिक भेदाभेद के कारण शोषण की समस्या को प्रश्रय मिला। ऊँच-नीच भेदाभेद के कारण समाज का ऊपर का तबका निचले सामाजिक तबके का शोषण करता रहा है।" भारतीय समाज में वर्ण-व्यवस्था में शक्ति और धन के आधार पर सवर्णों को इज्जत, सम्मान, प्रतिष्ठा के अधिकारी बनाया है। ग्रामों में तो दलित युवतियाँ उनके पंजे में फंसकर उनके विलास की सामग्री बनती हैं।जातीय वर्णव्यवस्था तथा वर्णव्यस्था के कारण दलितों का शोषण हो रहा है। समाज का मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग भी शोषण की समस्या से पीड़ित है। अज्ञान, अंधश्रद्धा के कारण दलितों का जमींदार, सरकारी अफसर, धार्मिक व्यक्ति राजनीतिक नेता, महाजन, साहूकार आदि के द्वारा शोषण हो रहा है।

<u>4.1.5-धार्मिक व्यक्ति द्वारा शोषण</u>

धरती धन न अपना' में जगदीश चंद्रजी ने पंडित संतराम के माध्यम से चमारों का होने वाला धार्मिक शोषण स्पष्ट किया है। जब मंदिर के पास हरिजन और चमार जाति के लोग पहुँचते हैं तब पंड़ित संतराम उन्हें दूर जाने की बात करता है वह उन्हें कुएँ की जगत और मंदिर के चबूतरे पर फटकने भी नहीं देता। अछूतों के स्पर्श से धर्मस्थल भ्रष्ट या अपवित्र हो जाती है ऐसी उनकी धारणा है

<u>4.1.6-सरकारी अफसर और पुलिस द्वारा शोषण</u>

धरती धन न अपना' में जगदीश चंद्रजी ने अज्ञानी दलितों का पुलिस और अफसरों द्वारा होने वाला शोषण चित्रित किया है। सरकारी लोग दलितों के अज्ञान का फायदा उठाकर उनका आर्थिक शोषण करते हैं। उपन्यासकार ने मुंशी के माध्यम से इस बात को स्पष्ट किया है। मुंशीजी काली की अस्सी रूपयें की मनीऑर्डर लेकर आता है। परन्तु उसे सवा उन्यासी रूपये देता है जब काली उन्हें कम रूपये

देने की बात पूछता है तो मुंशी बारह आने महसूल के नाम से लेता है। परन्तु काली पढ़ा-लिखा पात्र होने के कारण वह कहता है महसूल तो प्रारम्भ में ही मनीऑर्डर करने वालो ने दे दिया है।

सरकारी अफसर कई रूपों में, कई प्रकारों से दलितों का शोषण करते हैं। पटवारी लोग, मुंशीजी, दरोगाजी जैसे सरकारी अफसर दलितों का किस प्रकार शोषण करते हैं, इस पर जगदीश चंद्र जी ने प्रकाश डाला है।

4.1.7-नारी शोषण

जगदीश चंद्र जी ने रल्हन गाँव के सामाजिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए नारी के विविध रूपों पर प्रकाश डाला है। वहाँ की नारी शोषित, विद्रोही एवं पीड़ित भी है। कानून से जमींदारी प्रथा प्रमाप्त हो गई है। परन्तु जमीदारों की ऐंठन आज भी बरकरार है। इस पर उपन्यासकारों ने व्यंग्य किया है। चौधरी इसी बात का प्रमाण है। ज्ञानों परिवार और रूढ़ि द्वारा शोषित नारी है। ज्ञानों चौधरी द्वारा पीटे गये जीतू का हाल पूछने के लिए जाती है तब उसका भाई मंगू उसे फटकारते हुए कहता है- "तू यहाँ क्या कर रही है। तू घर पहुँच, तेरे टुकड़े करके जमीन में गाड़ दूँगा।" और लाठी का प्रहार किया। जब चौधरी हरदेव सिंह लच्छो की अस्मत लूटने का प्रयास करता है, तब लच्छो उसके पाँव पकड़ती है। आदि शोषित नारी के रूप में उदाहरण हैं।

चौधरी द्वारा जीतू को पीटने पर ज्ञानो की माँ गाली देकर उसका विरोध करती है | इस घटनाओं से स्पष्ट होता है यहाँ की नारी अब धीरे-धीरे नारी की रक्षा के लिए आगे बढ़ रही है। उपन्यासकार ने नारी के खरीद-फरोख्त पर भी प्रकाश डाला है। नारी सिर्फ शोषण का रूप नहीं बल्कि खरीद-फरोख्त की या बिकाऊ चीज है। नारी के इस अमानवीय रूप पर जगदीशचंद्र जी ने सोचा है। मिस्त्री संता सिंह पचास रूपये में नारी को खरीदना चाहता है। सरदार पूर्ण सिंह ने भी एक औरत को खरीद लिया था, परन्तु उनके साथ सात दिन रहकर वह औरत सब सामान लेकर भाग गई। बाबक के लाला बनारसीदास नारी की खरीद-फरोख्त का धंधा करता है।काली और ज्ञानो का विवाह पूर्व अवैध यौन संबंध होने से उसे कोख भर जाती है। परिणामतः ज्ञानों की माँ उसे संखिया दवा देकर मार डालती है। नारी द्वारा होने वाला शोषण यहाँ चित्रित किया है।

4.1.8-जातीय भेद भाव

धरती धन न अपना' उपन्यास में जगदीशचंद्रजी ने जातीय भेदाभेद की समस्या के बारे में विस्तार से सोचा है। उन्होंने इस समस्या के बारे में पंबाज प्रान्त के रल्हन गाँव का चित्रण प्रस्तुत किया है। इस गाँव के पंड़ित संतराम हरिजनों को देखकर दूर से ही दुर-दूर करना शुरू कर देते हैं। वे चमादड़ी के लोगों को मंदिर में प्रवेश नहीं करने देते हैं तथा मंदिर के सामने वाले कुएँ की जगत पर भी फटकने नहीं देते। वे इन लोगों के स्पर्श से तथा चमारों की परछाई से भी परहेज करते हैं। गाँव का दुकानदार भी हरिजनों के साथ जातीय भेदाभेद बरतते दिखाई देता है। एक बार छज्जूशाह ने काली को सिगरेट पीने के लिए दिया तब काली कहता है। कि मैं सिगरेट पीना कम ही पसन्द करता हूँ, मुझे तो हुक्का यदि है तो दीजिए, मैं हुक्का ही पीऊँगा। इस बात पर छज्जूशाह कहता है कि- "बात तो तुम्हारी ठीक है। मैंने अपने हुक्के के अलावा दो हुक्के और भी रखे हुए थे, एक

जाटों के लिए और दूसरा चमारों के लिए कुछ दिन हुए चमार ने पीने के लिए हुक्का मांगा, मैंने दे दिया और वह भला मानस जाते समें आँख बचा हुक्का लेते गया। "इस प्रकार गाँव के दुकानदार भी जातीय भेदाभेद रखते दिखाई देते हैं। काली घर बनवाने के लिए लगने वाली ईंट खरीदने भट्‌टी पर गया तब वहाँ पर उसके साथ परजापत दीनू भी गया। भट्‌टी का मुंशी काली को देखकर परजापत से कहता है कि "यह आदमी शक्ल से तो चमार दिखाई देता है लेकिन पहनावा कुछ और ही कहता है।" पृष्ठ ३७ यहाँ स्पष्ट होता है। उस गाँव के लोग वेशभूषा से भी जाति की पहचान रखते हैं तथा शक्ल-सूरत से भी जाति का अन्दाज करते है। इससे गाँव के लोगों में जातीय भेदाभेद कितना गहरा असर कर चुका है इसके भी दर्शन होते हैं। काली का मकान बनाने के लिए राजगीर संतासिंह जब मजदूरी तय कर रहा था, उसीसमय यह भी स्पष्ट करता है कि- "हम जहाँ राज का काम करते हैं, दोपहर की रोटी और शाम की चाय वही खाते-पीते हैं।

तेरे घर में रोटी तो खा नहीं सकता, इसलिए तुम रोटी-चाय के नकद पैसे अलग दे देना।" काम पर आने के बाद जब मिस्त्री संतासिंह को जोर की प्यास लगती है तब काली उससे कहता है कि "नंद सिंह तो तेरा सिखभाई है उसके घर से पानी ला दूँ।" इस पर मिस्त्री काली से कहता है कि "वह तो रमदसिया सिख है, उसका मेरा क्या रिश्ता ? सिख बन जाने का मतलब यह तो नहीं कि वह चमार नहीं रहा, धर्म बदलने से जात तो नहीं बदल जाती।" ३९यहाँ पर स्पष्ट होता है कि इस गाँव में जातीय भेदाभेद सभी स्तर की जातियों में दिखाई देता है, जो गाँव के विकास में सबसे बड़ी रूकावट मालूम होती है। चमादड़ी के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति ताया बसन्ता भी नंदसिंह से कहता है कि- "तेरे सिर पर अभी सींग नहीं उगे हैं। तू कुछ भी बन जा लेकिन रहेगा चमार का चमार ही। जात कर्म से नहीं जन्म से बनती है। अगर चमार कहलवाना पसन्द नहीं था तो किसी और माँ के पेट से

जनम लिया होता इस प्रकार के जाती भेद भाव की समस्या को उपन्यास में दर्शाया हैं |

4.1.9-भ्रष्टाचार

धरती धन न अपना' में जगदीशचंद्रजी ने इस समस्या की तरफ ध्यान खींचा है। उन्होंने जातीय भेदाभेद और धर्मपरिवर्तन की समस्या का विस्तृत रूप से चित्रण किया है। साथ-ही-साथ भ्रष्टाचार की समस्या के बारे में चित्रण किया है। पटवारी द्वारा जमीन नापते समय फीस लेना, डाक द्वारा मनीऑर्डर देते समय वापस महसूलके नाम से पैसा वसूलना, काली का नया घर बनाते समय बुनियाद खोदने के मामले को लेकर निक्कू से झगड़ा होता है तब धड्डम चौधरी पटवारी को बुलाने की सलाह देते हुए कहता है कि "वैसे तो इस काम की कोई फीस नहीं होती, लेकिन अगर फीस न दो तो पटवारी को कभी जरीब नहीं मिलती तो कभी गाँव का नक्शा खो जाता है।" पृष्ठ१५० इस प्रकार सरकारी अधिकारी गाँव के लोगों से पैसे वसूल करते हैं। काली का जब शहर से मनीआर्डर आता है तो मुंशी जी द्वारा पैसा कम दिये जाने पर काली कहता है- "मुंशीजी मनीआर्डर तो अस्सी रूपये का है, आप मुझे सिर्फ सवाउनासी रूपये दे रहे हैं।" उपरोक्त कथन को मुंशी स्पष्ट करते हुए कहता है कि "बारह आने महसूस के भी तो लगेगा।" इस बात का उत्तर देते हुए काली कहता है- "महसूल तो मनीऑर्डर भेजने वाला पहले ही दे देता है।"इस वादविवाद से मुंशीजी चिढ़कर पूरा पैसा दे देता है। यहाँ स्पष्ट होता है की किस प्रकार सरकार जनता पर भ्रष्टाचार करती हैं |

4.1.10-अशिक्षा

धरती धन न अपना' उपन्यास में जगदीश चंद्रजी ने शिक्षा के अभाव के कारण बनी दलितों की दयनीय स्थिति पर विचार किया है। अर्थाभाव, अज्ञान के कारण चौधरी, जमींदार दलितों का शोषण करते हैं। सूद के बदले बेगारी लेना, मुफ्त काम

करवाने की उनकी नियत बनी है। शिक्षा के अभाव के कारण शोषण का पहिया घूमता है। चौधरी द्वारा होने वाला शोषण इसका प्रमाण है। वहाँ के चौधरी अशिक्षित दलितों को कर्ज देते है। उसके ब्याज के ही रूप में लोगों की कई पीढ़ियों से बेगारी करवाता रहता है। मंगू चमार इसका उदाहरण है। बनिया, साहूकार उधार सामान या रुपये देकर उसमें बढ़ोत्तरी करके तथा ब्याज पर ब्याज लगाकर अशिक्षित दलितों से पैसा वसूल करते हैं। काली के चाचा को दिया गया पैसा ब्याज सहित छज्जूशाह द्वारा काली से वसूल करना इसका प्रमाण है तथा काली का जब शहर से मनीऑर्डर आता है तब महसूल के नाम पर दुबारा पैसा काटना इत्यादि घटनाओं के पीछे शिक्षा का अभाव ही नजर आता है। जिसके परिणाम स्वरूप अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती दिखाई देती हैं|

<u>4.1.11-धर्म परिवर्तन</u>

जगदीशचंद्रजी ने 'धरती धन न अपना' में प्रस्तुत समस्या पर विस्तृत विचार किया है। पादरी अचिन्त्यराम गाँव-गाँव जाकर हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में कपोल-कल्पित कहानी बताकर लोगों के मन में देवी-देवताओं के बारे में संभ्रम पैदा करता है तथा ईसाई बनने के बाद मिलने वाले फायदे बताता है। नौकरी-चाकरी, शादी-ब्याह आदि की प्राप्ति होती है कहकर धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करता है। पादरी से प्रभावित होकर नंदसिंह ने धर्म परिवर्तन किया। अपने धर्म परिवर्तन के बारे में नंदसिंह काली से कहता है- "हम ईसाई बनने के बाद में पादरी जी ने कह सुनकर लड़के प्रकाश को नौकरी दिला दी। अपनी बिरादरी बन जाय तो नौकरी-चाकरी और शादी ब्याह के सब बंदोबस्त हो जाते हैं। सबसे बड़ा फायदा तो यह है कि अब हम चमार नहीं रहे।"

भारतीय समाज व्यवस्था में जातीय भेदाभेद और छुआछूत की भावना प्रबल रही है। इसी कारण शोषित, अछूत, दलित ईसाई बन जाते हैं। पादरी के दादा भी पहले हिन्दू थे परन्तु अंत में वे ईसाई बन गये। पादरी काली से कहता है- 'मेरे दादा

हिन्दू थे जब वह मरे तो काफी परेशानी का सामना करना पड़ा और पिताजी तंग आकर यीशू मसीहा की शरण में आकर ईसाई बन गये।' यहाँ स्पष्ट है शोषित दलित अपनी समस्याएँ सुलझाने के लिए धर्म परिवर्तन कर रहा है। ठाकरी काली से कहती है- 'काली तू भी ईसाई क्यों नहीं बन जाता, चमार रहने में क्या मिलता है। अंत में काली और ज्ञानों ईसाई बनना चाहता है जिसके कारण उनकी शादी हो सकती है, परन्तु ज्ञानों की उम्र छोटी होती है।

इसलिए पादरी धर्मपरिवर्तन की इजाजत नहीं देता है। यहाँ स्पष्ट है कि हिन्दू दलित लोग मजबूर होकर धर्मपरिवर्तन कर रहे हैं।

आधुनिक काल में यह धर्म परिवर्तन एक सामाजिक और सांस्कृतिक समस्या बनी है।

इस प्रकार की दलित समस्याओं को जगदीश चंद्र जी ने उनके धरती धन अपना उपन्यास में रेखांकित किया हैं |

<u>संदर्भ सूची :-</u>

1-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ ७७

2-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ १५७

3-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ १९३

4-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २००

5-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २०८

6-धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

7-जगदीश चद्र दलित जीवन के उपन्यासकर (सं. चमन लाल) प्रकाशन अधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड -संस्करण (2010) पृष्ठ ९९

8-जगदीश चद्र दलित जीवन के उपन्यासकर (सं. चमन लाल) प्रकाशन अधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड -संस्करण पृष्ठ १०१

5 अध्याय

5.1उपन्यास की भाषा

धरती धन न अपना' उपन्यास का कथानक पंजाब प्रांत रहा है। संपूर्ण उपन्यास में पंजाबी ग्रामीण परिवेश दिखाई देता है। दलित समाज का सामाजिक यथार्थ चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में पंजाबी भाषा के शब्द कहावतें, मुहावरें, लोकक्तियों का प्रयोग हुआ है। दलित समाज में बोली जानेवाली भाषा, गालियाँ आदि का चित्रण किया गया है। जगदीश चंद्र जी ने ग्रामीण परिवेश की भाषा का उपन्यास में प्रयोग किया हैं| उपन्यास में दलितों की बोली भाषा का चित्रण हुआ है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित भाषा में विभिन्न शब्द प्रयोग, कहावतें, मुहावरें, लोकोक्तियाँ , भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है | उन्होंने उपन्यास में कई अंग्रजी , उर्दू और अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग किया हैं|

5.1.1शब्द-प्रयोग

लोकभाषा के शब्द

लेखक अपनी रचना में समाज का चित्रण करता है। सामाजिक परिवेश के साथ-साथ वहाँ बोली जानेवाली लोक भाषा के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास ग्रामांचलिक है। इसमें ग्रामीण जीवन में बोली जानेवाली लोकभाषा के शब्दों का प्रयोग मिलता है।कथाक्षेत्र पंजाब भूमि रहने के कारण पंजाबी भाषा के शब्द का उपन्यास में प्रयोग हुआ हैं वे इस प्रकार हैं 'चौधर", 'शहरिया', 'रकबा', 'सागूदाना", 'हनेर", शशोपंज' (दुविधा), 'घेर" (दर्द),

5.1.2 तत्सम शब्द-

सभी भाषाओं का निर्माण संस्कृत भाषा से माना जाता है। अतः संस्कृत के शब्द विभिन्न भाषाओं में ज्यों-की-त्यों प्रयोग किए हुए दिखाई देते हैं। ऐसे संस्कृत शब्द 'तत्सम शब्द' कहलाते हैं। "तत्सम का शाब्दिक अर्थ है- उसके समान। जो शब्द संस्कृत के समान होकर बिना परिवर्तन के ज्यों-के-त्यों रूप में हिंदी में आए हैं।" ऐसे शब्द 'तत्सम शब्द कहलाते हैं।'धरती धन न अपना' उपन्यास में संस्कृत से आए शब्द बिना परिवर्तन के प्रयुक्त हुए हैं। वे इस प्रकार हैं- 'समय', 'पिता', 'नेता'", 'परमात्मा' आदि। पृष्ठ 59 धरती धन न अपना जगदीश चंद्र

5.1.3 तद्भव शब्द

'तद्भव शब्द' संस्कृत शब्दों के परिवर्तनीय रूप होते हैं। "तद्भव शब्द वे होते हैं, जिन्हें हम विकृत कह सकते हैं। जो संस्कृत के शुद्ध रूप से निकले होते हैं। संस्कृत के जो शब्द पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से होते हुए हिंदी में आए हैं। जिनका आते-आते मूल रूप बदल गया है, वे 'तद्भव शब्द' कहलाए जाते हैं।"" हिंदी भाषा में ऐसे अनेक शब्द मिलते हैं। पृष्ठ 98 धरती धन न अपना जगदीश चंद्र

5.1.4 विदेशी शब्द

'धरती धन अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने अंग्रेजी, उर्दू, पोर्तुगाली, अफगानी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है।

1. अंग्रेजी शब्द- 'क्लास स्ट्रगल", 'एक्सप्लाइट', 'अनसायंटिफिक थ्योरी", 'रिएक्शनरी', 'स्लेवरी', 'लीडरशीप', 'मास मुवमेण्ट" आदि अंग्रेजी शब्द का उपयोग किया हैं |

2. फारसी शब्द - 'दरवाजा', 'जबान', 'बीमार', 'नाखून'", 'जहर' आदि।

3. अफगानी शब्द- 'अचार'।

4. पुर्तगाली शब्द -'अलमारी'"।

5. अरबी शब्द - 'धर्म', 'मुहल्ला', 'मौत', 'शहर', 'बुनियाद', 'दीवार',

5.1.5 हिंदी भाषा के मुहावरें -

'शक्की होना', 'आग-बबूला होना', 'कटी उंगली में नमक छिड़कना 'साँप सूँघना' आदि पंजाबी और हिंदी भाषा के मुहावरों का प्रयोग किया गया हैं |

5.1.6 कहवाते -

धरती धन न अपना उपन्यास में जगदीशचंद्र ने अनेक कहावतों का प्रयोग किया है।

-"जोरावर का सात बीस का सौ।""

-"गोरा कमीन और काला ब्राह्मण दोनों हरामी होते हैं।""

पंजाबी भाषा के कहावतों का हिंदी भाषा में रूपांतर किया हुआ है।

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ- 32

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 48

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ- ८८

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -47

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -142

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ- 144

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ 110

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 247

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 247

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 239

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 253

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -11

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 24

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 44

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -98

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 283

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 164

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 275

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्लीपृष्ठ - 142

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्लीपृष्ठ - 203

5 अध्याय

5.1उपन्यास की भाषा

धरती धन न अपना' उपन्यास का कथानक पंजाब प्रांत रहा है। संपूर्ण उपन्यास में पंजाबी ग्रामीण परिवेश दिखाई देता है। दलित समाज का सामाजिक यथार्थ चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में पंजाबी भाषा के शब्द कहावतें, मुहावरें, लोकक्तियों का प्रयोग हुआ है। दलित समाज में बोली जानेवाली भाषा, गालियाँ आदि का चित्रण किया गया है। जगदीश चंद्र जी ने ग्रामीण परिवेश की भाषा का उपन्यास में प्रयोग किया हैं| उपन्यास में दलितों की बोली भाषा का चित्रण हुआ है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित भाषा में विभिन्न शब्द प्रयोग, कहावतें, मुहावरें, लोकोक्तियाँ , भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है | उन्होंने उपन्यास में कई अंग्रजी , उर्दू और अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग किया हैं|

5.1.1शब्द-प्रयोग

लोकभाषा के शब्द

लेखक अपनी रचना में समाज का चित्रण करता है। सामाजिक परिवेश के साथ-साथ वहाँ बोली जानेवाली लोक भाषा के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास ग्रामांचलिक है। इसमें ग्रामीण जीवन में बोली जानेवाली लोकभाषा के शब्दों का प्रयोग मिलता है।कथाक्षेत्र पंजाब भूमि रहने के कारण पंजाबी भाषा के शब्द का उपन्यास में प्रयोग हुआ हैं वे इस प्रकार हैं 'चौधर", 'शहरिया', 'रकबा', 'सागूदाना", 'हनेर", शशोपंज' (दुविधा), 'घेर" (दर्द),

5.1.2 तत्सम शब्द-

सभी भाषाओं का निर्माण संस्कृत भाषा से माना जाता है। अतः संस्कृत के शब्द विभिन्न भाषाओं में ज्यों-की-त्यों प्रयोग किए हुए दिखाई देते हैं। ऐसे संस्कृत शब्द 'तत्सम शब्द' कहलाते हैं। "तत्सम का शाब्दिक अर्थ है- उसके समान। जो शब्द संस्कृत के समान होकर बिना परिवर्तन के ज्यों-के-त्यों रूप में हिंदी में आए हैं।" ऐसे शब्द 'तत्सम शब्द कहलाते हैं।'धरती धन न अपना' उपन्यास में संस्कृत से आए शब्द बिना परिवर्तन के प्रयुक्त हुए हैं। वे इस प्रकार हैं- 'समय', 'पिता', 'नेता'", 'परमात्मा' आदि। पृष्ठ 59 धरती धन न अपना जगदीश चंद्र

5.1.3 तद्भव शब्द

'तद्भव शब्द' संस्कृत शब्दों के परिवर्तनीय रूप होते हैं। "तद्भव शब्द वे होते हैं, जिन्हें हम विकृत कह सकते हैं। जो संस्कृत के शुद्ध रूप से निकले होते हैं। संस्कृत के जो शब्द पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से होते हुए हिंदी में आए हैं। जिनका आते-आते मूल रूप बदल गया है, वे 'तद्भव शब्द' कहलाए जाते हैं।"" हिंदी भाषा में ऐसे अनेक शब्द मिलते हैं। पृष्ठ 98 धरती धन न अपना जगदीश चंद्र

5.1.4 विदेशी शब्द

'धरती धन अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने अंग्रेजी, उर्दू, पोर्तुगाली, अफगानी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है।

1. अंग्रेजी शब्द- 'क्लास स्ट्रगल", 'एक्सप्लाइट', 'अनसायंटिफिक थ्योरी", 'रिएक्शनरी', 'स्लेवरी', 'लीडरशीप', 'मास मुवमेण्ट" आदि अंग्रेजी शब्द का उपयोग किया हैं |

2. फारसी शब्द - 'दरवाजा', 'जबान', 'बीमार', 'नाखून'", 'जहर' आदि।

3. अफगानी शब्द- 'अचार'।

4. पुर्तगाली शब्द -'अलमारी'"।

5. अरबी शब्द - 'धर्म', 'मुहल्ला', 'मौत', 'शहर', 'बुनियाद', 'दीवार',

5.1.5 हिंदी भाषा के मुहावरें -

'शक्की होना', 'आग-बबूला होना', 'कटी उंगली में नमक छिड़कना 'साँप सूँघना' आदि पंजाबी और हिंदी भाषा के मुहावरों का प्रयोग किया गया हैं |

5.1.6 कहवाते -

धरती धन न अपना उपन्यास में जगदीशचंद्र ने अनेक कहावतों का प्रयोग किया है।

-"जोरावर का सात बीस का सौ।""

-"गोरा कमीन और काला ब्राह्मण दोनों हरामी होते हैं।""

पंजाबी भाषा के कहावतों का हिंदी भाषा में रूपांतर किया हुआ है।

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ- 32

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 48

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ- ८८

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -47

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -142

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ- 144

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ 110

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 247

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 247

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 239

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 253

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -11

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 24

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 44

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -98

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 283

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 164

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 275

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्लीपृष्ठ - 142

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्लीपृष्ठ - 203

उपसंहार

मेरे शोध का प्रमुख विषय धरती धन न अपना उपन्यास में दलित समस्या हैं | यह उपन्यास मैने पहले कभी नही पढ़ा था | जब मैने यह पुस्तक पुस्तकालय में देखी तब मैंने यह उपन्यास पढ़ा तब मुझे लगा कि यह मेरा शोध विषय होगा एस उपन्यास को चुनने का कारण यह है कि इस उपन्यास में लेखक ने गहराई से दलित जीवन, और जाति व्यवस्था को दर्शाते हुए इस उपन्यास को लिखा है | मुझे इस उपन्यास को पढ़ने के बाद मेरे सामने सचाई दिखाई दी | मुझे लगा कि इस उपन्यास में जिस दलित समस्या को दर्शाया गया है उसके बारे में मुझे और गहराई से जानना है | इसलिए मैने इस विषय को चुनकर दलित समस्या पर अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए शोध करना शुरू किया | मुझे दलित साहित्य को पढ़ना बहुत रोचक लगता है इसी कारण मैने शोध के लिए यह विषय चुना| दलितों की जो समस्याएं है वह मै इस शोध के माध्यम से लोगो तक पहुँचा सकती हूँ |इसे लोगों तक लाना और उसपर विचार करने के लिए प्रेरित करना बहुत आवश्यक है | इसकी वजह से समाज में कुछ बदलाव हो सकता है | मुझे जो संदर्भ मिले हैं उसी आधार पर मैंने शोध की शुरवात की हैं|

मेरे शोध में मैंने ज्यादा दलित जीव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने की कोशिशें की हैं क्योंकि मेरा मुख्य विषय दलित पर आधारित हैं| दलित जीवन को जानने के लिए मैने अन्य दलित रचनाकारों को पढ़ा हैं | उसका चित्रण मैंने मेरे शोध के मध्यम से व्यक्त किया हैं | इस शोध को करते समय मुझे दलित साहित्य से रूबरू होनेक मौका मिल और दलित साहित्य क्या हैं, उनके संघर्ष, पीढी को जनने का मौका मिला। शोध के माध्यम से मैंने अपने विचारो को व्यक्त किया हैं| अन्य साहित्य के साथ भी मैंने इस उपन्यास की तुलना की हैं| उसका उल्लेख मैंने संदर्भ सूची में किया हैं| मुझे लगता है कि मेरे इस शोध से समाज

और साहित्य दोनों में इसकी उपयोगिता बनेगी जो भी इस विषय पर अपना शोध करना चाहता है उन्हें इसके माध्यम से दलित समाज के संघर्ष, शोषण की कुछ जानकारी प्राप्त हो सकती हैं| दलित जीवन की जो समस्या है वह इस शोध के कारण समाज तक पहुँच सकती हैं| इससे पाठक को समझने और जानने में आसानी हो सकती है| यह विषय साहित्य में अति आवश्यक हैं, ऐसा मुझे लगता है| मैंने जो उपन्यास चुना हैं उसपर ज्यादा शोध नहीं मिलतो मैंने पूरे शोध में दलित साहित्य को महत्व दिया हैं | मैंने मेरे शोध समय के अनुसार दलित जीवन को पढ़ने और समझने का प्रयास किया हैं|

<u>संदर्भ सूची</u>

1-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ , २२६

2-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २२८

3- हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २३७

4-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २३५

5-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २३९

,4-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ ७७

2-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ १५७

3-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ १९३

4-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २००

5-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २०८

6-धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

7-जगदीश चद्र दलित जीवन के उपन्यासकर (सं. चमन लाल) प्रकाशन अधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड -संस्करण (2010) पृष्ठ ९९

8-जगदीश चद्र दलित जीवन के उपन्यासकर (सं. चमन लाल) प्रकाशन अधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड -संस्करण पृष्ठ १०१

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ- 32

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 48

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ- ८८

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -47

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -142

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ- 144

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ 110

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 247

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 247

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 239

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 253

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -11

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 24

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 44

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -98

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 283

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 164

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 275

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्लीपृष्ठ - 142

धरती धन न अपना जगदीश चन्द्र - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्लीपृष्ठ - 203

सन्दर्भ- हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन (डॉ शभूनाथ द्विवेदी) प्रकाशक पूजा पब्लिकेशन

6-B, बौद्धनगर, नौबस्ता(संस्करण 2013) पृष्ठ १३९,१४०,१४४,१५०,१४२,१७०,१४५

-एकलव्य चंद्रमोहन प्रधान १६६७ अनुराग प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ १२३

- मदन दीक्षित (मोरी की ईट) सं १६६६ प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ ११७,११६

21 वी सदी के कथा साहित्य में दलित चेतना (डॉ सुनीता कावले) प्रकाशन रोली प्रकाशन संस्करण प्रथम 2015 पृष्ठ ५६

वही पृष्ठ ५७

सन्दर्भ- हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन (डॉ शभूनाथ द्विवेदी) प्रकाशक पूजा पब्लिकेशन

6-B, बौद्धनगर, नौबस्ता(संस्करण 2013) पृष्ठ १३९,१४०,१४४,१५०,१४२,१७०,१४५

-एकलव्य चंद्रमोहन प्रधान १६६७ अनुराग प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ १२३

- मदन दीक्षित (मोरी की ईट) सं १६६६ प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ ११७,११६

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ१३८

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ१८२

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ१८३

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ२३४

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ२३५

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ२३६

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 238

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 239

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 275

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 275

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 279

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 281

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 247

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 214

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 238

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 239

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 275

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 275

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 279

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 281

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 247

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 214

१-जगदीश चंद्र दलित जीवन के उपन्यासकर - सं. चमन लाल (प्रधाम संस्करण, 2010) प्रकाशन आधार प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड पृष्ठ 26,27

२- लाट की वापसी (जगदीश चद्र) पहला संस्करण 2000 प्रकाशन - राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली -110002

३- धरती धन न अपना उपन्यास (जगदीश चंद्र)

४-जगदीश चद्र रचनावली (संपादक विनोद शाही) प्रकाशन वर्ष 2011

1-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन डॉ० शम्भूनाथ द्विवेदी (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ , २२६

2-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन डॉ० शम्भूनाथ द्विवेदी (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २२८

3- हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन डॉ० शम्भूनाथ द्विवेदी (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ २३७

1-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन डॉ० शम्भूनाथ द्विवेदी (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 183

2-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन डॉ० शम्भूनाथ द्विवेदी (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 185

3- हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन डॉ० शम्भूनाथ द्विवेदी (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 186

1-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन डॉ० शम्भूनाथ द्विवेदी (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ , 187

2-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन डॉ० शम्भूनाथ द्विवेदी (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 188

3- हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन डॉ० शम्भूनाथ द्विवेदी (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 197

1-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन डॉ० शम्भूनाथ द्विवेदी (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ , 198

2-हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन डॉ० शम्भूनाथ द्विवेदी (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 199

3- हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन डॉ० शम्भूनाथ द्विवेदी (प्रकाशन पूजा पब्लिकेशन) -संस्करण 2013 पृष्ठ 203

21वी सदी के कथा साहित्य में दलित चेतना डॉ सुनीता कावले प्रकाशन रोली प्रकाशन संस्करण प्रथम 2015 पृष्ट 39

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय – ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

ATMANIRBHAR BH
SWAYAMPURNA

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403
Tel : +91-8669609
Email : registrar@unigoa.a
Website : www.unigoa.a

(Accredited by NAAC)

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/ 273

Date: 10/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Namiksha Satish Naik , a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 6 Hours &18Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Professor Dr. Bipin Tiwari .

for 10/05/2024

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Mr. Nandkishor K. Bandekar
Asst. Librarian
Goa University Library
Taleigao Goa

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA